ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष - 16 | अंक-15 | नवम्बर-I, 2015 | पाक्षिक | माउण्ट आबू | ₹8.00

मानसिक सरहदों को शांति व सद्भाव से सींचें:दादी

अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान सम्बोधित करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी। साथ हैं राज्यमंत्री ओटाराम देवासी, इंद्रेश कुमार, राजयोगिनी दादी रतनमोहिनी, ब्र.कु. निर्वैर व अन्य। आध्यात्मिक गीतों पर सुंदर प्रस्तुति देते हुए कलाकार।

- मज़हबी दीवारों को तोड़ो, उसे शांति से जोड़ो : दादी
- सभी की भागीदारी से भारत का पुन:निर्माण संभव: देवासी
- सकारात्मकता की अनूठी पहल भारत से ही : ब्र.कु. निर्वैर
- संस्कार व बेहतर संसार केवल राजयोग से आयेगा:इन्द्रेश कुमार

शांतिवन। जाति, पाति और धर्म के सरहद से एकता प्रभावित होती है। जबकि मनुष्य की हकीकत कुछ और है, हम सब एक ईश्वर की संतान हैं और रहेंगे। इसलिए मज़हबी दीवारों से ऊपर उठना चाहिए। उक्त उद्गार ब्रह्माकुमारीज़ की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन अवसर पर व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि हम एक स्वस्थ समाज अथवा भारत का निर्माण तभी कर पायेंगे जब स्वच्छता हमारी सोच में भी होगी। इससे मनुष्य जाति धर्म से ऊपर उठ जायेगा और सद्भावना का माहौल बनेगा। यहां से जाने वाले प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में राजयोग के ज़रिये अध्यात्म को अपनाना होगा।

राजस्थान के पशुपालन एवं देवस्थान राज्यमंत्री ओटाराम देवासी ने कहा कि स्वच्छ भारत के लिए सबकी भागीदारी ज़रूरी है। क्योंकि बिना सबके सहयोग के कोई भी कार्य नहीं किया जा सकता है। भौतिक, आर्थिक या राजनीतिक विकास सभी के लिए एकता और सद्भावना की आवश्यकता है। आज सरकार नई-नई योजनायें बना रही है परन्तु उसका सही इम्प्लीमेंटेशन ना होने से इसका लाभ आम जन को नहीं मिल पाता है।

राष्ट्रीय स्वयं संघ के राष्ट्रीय नेता इंद्रेश कुमार ने कहा कि राजयोग भारत की प्राचीन पद्धति है, इससे संस्कार और बेहतर संसार दोनों की रचना होती है। पृथ्वी, जल, वायु सब दूषित हो रहा है। संस्कृति भी दूषित हो रही है जो ज़्यादा चिंताजनक है। हमारे देश में दुर्भावना और जाति पाति की कोई परंपरा नहीं है। सभी को सभी धर्मों, जातियों का सम्मान करना चाहिए। एक-दूसरे पर दुर्भावना के वश बात नहीं करनी चाहिए। डॉ. के. सम्बा शिवा राव ने कहा कि यहां की व्यवस्था देखने के बाद पता चलता है कि जीवन में मूल्यों का कितना स्थान है। अन्नामलाई विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. एस. मेमन ने कहा कि मूल्यों पर आधारित शिक्षा अब विश्वविद्यालयों में भी चलाई जा रही है जो सराहनीय है।

कार्यक्रम में संस्था के महासचिव ब्र.कु. निर्वैर ने सभी का स्वागत करते हुए पूरे भारत में सकारात्मक माहौल बनाने की अपील की। कार्यक्रम में ब्र.कु. मृत्युंजय, ब्र.कु. मोहिनी, ब्र.कु. मुन्नी समेत कई लोगों ने भी विचार व्यक्त किये। इससे पूर्व गुब्बारे उड़ाकर सम्मेलन का आगाज़ किया गया।

शाश्वत यौगिक एवं जैविक खेती का सार्वभौमिक शंखनाद

- भिन्न-भिन्न गांवों एवं कस्बों में यौगिक एवं जैविक खेती के अभियान का संदेश ।
- भरतपुर पहुंचने पर हुआ किसान महासम्मेलन का आयोजन।
- यौगिक खेती रासायनिक खेती एवं जैविक खेती की तुलना में अधिक लाभदायक सिद्ध हुई - ब्र.कु. प्रहलाद
- कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. अमर सिंह ने किसानों को केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा उपलब्ध विभिन्न सुविधाओं से कराया अवगत।
- राष्ट्रीय कृषि एवं ग्राम विकास में बैंक(नाबार्ड) की भूमिका अहम-संभागीय प्रभारी अभय कुमार

भरतपुर। प्रकृति का अत्यधिक दोहन करने के फलस्वरूप धरती की उर्वरा शक्ति तथा जल की उपलब्धता व महंगे रासायनिक उर्वरकों एवं सिंचाई के साधनों का प्रयोग करने के बाद भी आज किसान अत्यधिक हतास और निराश हो जाता है। साथ ही साथ अन्न की पौष्टिकता भी प्रभावित हो रही है। इसमें शाश्वत यौगिक एवं जैविक खेती एक मील का पत्थर साबित होगी। उक्त विचार जिला कलेक्टर रवि जैन ने नगर सुधार न्यास ऑडिटोरियम में आयोजित अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान के महासम्मेलन में व्यक्त किये। इस अवसर पर राजयोगिनी ब्र.कु. विमला,प्रभारी,आगरा ज़ोन ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि जब भारत का प्रत्येक किसान अपनी आत्मा की धरनी में शुभ संकल्पों के बीज बोते हुए श्रेष्ठ कर्मों की खेती करेगा तब ही उसके खेत खलिहान और गांव खुशहाल बनेंगे।

किसान सशक्तिकरण अभियान के महासम्मेलन में दीप प्रज्वलित करते हुए रवि जैन, ब्र.कु. विमला, डॉ. धीरज सिंह, ब्र.कु. राजेन्द्र, ब्र.कु. मोना, ब्र.कु. प्रहलाद, डॉ. योगेन्द्र सिंह, शिव सिंह भौंट, ब्र.कु. सीताराम मीणा व अन्य।

अनुसंधान निदेशालय के निदेशक डॉ धीरज सिंह ने कहा कि किसी भी कार्य की सफलता व्यवस्था पर निर्भर करती है, यही बात खेती पर भी लागू होती है।

प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्र.कु. राजेन्द्र ने कहा कि संकल्प शक्ति सबसे महान शक्ति है, जिसके प्रयोग से बिना कौड़ी खर्चा किए खेतों की उर्वरकता एवं अन्न की पौष्टिकता को बढ़ाया जा सकता है। अभियान के लीडर ब्र.कु. मोना ने `समय की यही पुकार' कविता प्रस्तुत करते हुए कहा कि यौगिक खेती के लिए कुछ भी खर्चे की आवश्यकता नहीं है, केवल संकल्पों की पूंजी ही लगानी पड़ती है।

देवड़ावास स्थित यौगिक खेती फार्म के प्रभारी ब्र.कु. प्रहलाद ने बताया कि उक्त फार्म में किये गये प्रयोगों से यौगिक खेती

- शेष पेज 11 पर

दीप आप हैं, आप स्वयं प्रकाशित हैं

दीपावली का त्योहार खुशियों की बहार लेकर आता है जो कार्तिक मास की अमावस्या के दिन मनाया जाता है। माना जाता है कि दीपावली के दिन अयोध्या के राजा श्री रामचन्द्र जो चौदह वर्ष के वनवास के बाद लौटे थे इसीलिए अयोध्यावासियों ने उनके स्वागत में घी के दीये जलाये थे, तभी से यह रोशनी का त्योहार मनाया जाता है।

दीपावली मनाने के पीछे और भी कई कारण हैं, जैसे इस दिन श्रीकृष्ण ने नरकासुर का वध कर उसके चंगुल से 16 हज़ार युवतियों को मुक्त कराया था। इस कारण प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए लोगों ने दीप जलाये थे। इसी दिन समुद्र मंथन के पश्चात् 'लक्ष्मी' व 'धनवन्तरी' प्रकट हुये थे तथा अन्य देवताओं ने उनकी अर्चना की थी। आज भी इस दिन लोग सुख समृद्धि एवं ऐश्वर्य की कामना से लक्ष्मी पूजन करते हैं। यह भी माना जाता है कि इस दिन विष्णु जी नरसिंह अवतार धारण कर भक्त प्रहलाद की रक्षा करने आये थे। इस कारण लोगों ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए घी के दीये जलाये। हिन्दुओं के साथ-साथ सिक्खों के लिए भी दीपावली महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसी दिन अमृतसर में 'स्वर्णमंदिर' का शिलान्यास किया गया था। जैनियों के महावीर स्वामी का निर्वाण दिवस भी आज के दिन ही माना गया है, इसीलिए दीपावली को भारत के सभी लोग बड़े धूमधाम से मनाते हैं।

- ब्र. कु. गंगाधर

इसी शुभ दिन ईश्वरीय विश्व विद्यालय स्थापित

हम सबने जाना कि क्यों ये दीपावली का त्योहार इतना महत्वपूर्ण है, क्यों इसे सभी लोग बड़े उमंग-उल्लास के साथ मनाते हैं। परन्तु एक बात जो इस दिन को सबसे ज़्यादा महत्वपूर्ण बना देती है, वो यह है कि इस दीपावली के शुभ दिन को ही हम सभी के पिता परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए चुना।

दीपावली के दिन ही इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय की नींव रखी गई। एक ऐसा ईश्वरीय विश्व विद्यालय जो ईश्वरीय ज्ञान द्वारा, आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा हमारी बुझी हुई आत्मा की ज्योति को फिर से प्रज्वलित करता है, और न केवल आत्मा के दीप प्रज्वलित करता है बल्कि उसे सबकी आत्मा की ज्योति को जगाने वाला बना देता है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना से परमात्मा हमें ये बताना चाहते हैं कि हे आत्माओं! तुम स्वयं ही प्रकाश हो, तुम्हें किसी स्थूल दीये को प्रकाशित कर प्रसन्न होने की आवश्यकता नहीं, बल्कि मेरी यही मनसा है कि तुम सभी मेरे जगमगाते चैतन्य दीपक सदा ही जगमगाते रहो और सदा ही प्रसन्नचित्त रहो। साथ ही परमात्मा शिव ये भी कहते हैं कि हे मेरे लाडले बच्चे! तुम कई जन्मों से अज्ञान अंधकार रूपी वनवास में जी रहे हो, तुम्हें रावण ने अपने कब्ज़े में ले रखा है, अब मैं तुम्हें इस रावण की कैद से छुड़ाता हूँ और ले चलता हूँ तुम्हें राम राज्य।

इस विश्व विद्यालय की स्थापना के साथ ही परमपिता शिव हमें उस विकारी, पतित, भ्रष्टाचारी और नरक जैसी कलियुगी दुनिया से आज़ाद करवा देते हैं, ताकि इस परमात्म मिलन व सर्वमंगलकारी संगम युग में हम पुरुषार्थ कर उनके द्वारा स्थापित सुंदर स्वर्णिम सृष्टि में जाने के अधिकारी बन जायें, जिसके प्रतीकात्मक रूप में श्रीकृष्ण को नरकासुर का वध कर 16 हज़ार युवतियों को मुक्त कराते हुए दिखाया गया है।

दीपावली के दिन भक्त प्रहलाद को बचाने के लिए विष्णु जी द्वारा नरसिंह अवतार लेकर आना ये सिद्ध करता है परमात्मा अपने सच्चे भक्त अर्थात् अपने बच्चों को राक्षसी प्रवृत्तियों से दूर कर उन्हें बुराई की ओर जाकर अपने जीवन को बर्बाद करने से बचाते हैं व उन्हें अपनी शरण में लेते हैं, जिससे उनका जीवन श्रेष्ठ बन जाता है। आज परमात्मा शिव भी इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से हमें राक्षसी प्रवृत्तियों से दूर रहने की शिक्षा देते हैं व अपनी शरण में लेकर अर्थात् अपनी गोद में लेकर

- शेष पेज 8 पर

कुमारियों का सच्चा श्रृंगार है सच्चाई, प्रेम, खुशी और सन्तुष्टता

मेरी दिल दिलाराम के साथ है, पता है मेरे दो बच्चे हैं - सुख और शान्ति। सुख है बेटा, शान्ति है बेटी, भले आप कुमारी हो आपकी सगाई भी हो गई, बच्चे भी आ गये क्योंकि अभी समय थोड़ा है, हरेक को पुरुषार्थ करके 5 बातें जो गीतों में बताते हैं वो लाइफ में हो। पहला गीत है सखी रे मैंने पायो तीन रत्न...इस गीत की एक एक लाइन आपके दिल को लग गई होगी। दूसरा गीत है जहां हमारा तन होगा वहां हमारा मन होगा...तन से यहां बैठे हो, मन कहां है? तो यह मन अगर यहां है तो 5 विकारों में से एक विकार की अंशमात्र भी न हो।

बाबा ने कहा है ऑनेस्ट रहो। कोई भी कमी हो तो बाबा को बताओ, बाबा मेरे में यह कमी है। ऐसे नहीं बाबा के सामने बैठे हो तो अच्छे हो और थोड़ा इधर-उधर जाते हो तो बाबा को भूल जाते हो। बाबा को भूलना माना बाबा की शिक्षाओं को भूलना। बाबा की जो शिक्षायें हैं वो हमारा श्रृंगार है, खास कुमारियों का श्रृंगार क्या है? कुमारियों को क्या श्रृंगार करना है? सच्चाई, प्रेम, सदा खुश, कभी भी न किससे नाराज़, न मेरे से कोई नाराज़। जो असली अच्छी-अच्छी पुरानी कुमारियां हैं, जिन्हों को डायरेक्ट बाबा ने पालना दी है, आज तक वो पालना सेवा कर रही है। हमें भी जो बाबा ने पालना दी है, आज से लेके जो बाबा से सुनते हो, औरों को सुनाने का प्लान बनाओ। ताकि और धर्म वालों को भी शान्तिधाम, निर्वाणधाम, परमधाम क्या है, कम से कम यह तो बता दो। भले सुखधाम में नहीं आवें पर शान्तिधाम हमारा घर है, निर्वाणधाम परमधाम हमारा घर है। तो हमारे जो दिल में होगा, धारणा होगी वही हमारे मुख पर आयेगा। मुख पर ऐसे ही नहीं आता है।

मैं जब पहले-पहले ज्ञान में आई, बाबा को भगवान समझती थी ना, यह भगवान है, परमात्मा का रथ है इतनी भावना थी, पर सखा रूप से इतनी भासना नहीं थी। तो सखा रूप में बाबा से कैसे मिलूँ, यह दीदी ने मुझे सिखाया, उस दिन से लेके मैं बाबा को कम्पैनियन के रूप में देखती हूँ। भगवान को अपना साथी बनाने से संग का रंग ऐसा लगता है हिम्मते बच्चे मददे बाप, पर सखा रूप में मदद ऐसी करता है जिसके कारण मुझे कभी यह नहीं लगता कि मैं अकेली हूँ, मैं अकेली होती तो खटिया पर सोई रहती। पर अकेली नहीं हूँ वो मेरा साथी है, यह रचता और रचना के ज्ञान से साक्षी होकर के, ड्रामा की नॉलेज से यह ड्रीम है या रीयल्टी है, बताओ।

मैंने कभी कर्मणा सेवा नहीं कहा है, मैं कहती हूँ यज्ञ सेवा। इन कर्मेन्द्रियें के द्वारा जो सेवा हुई तो एक कर्मेन्द्रियां शरीर में हैं, मन बाबा में है। इज़ी है ना। मन बाबा में, ज्ञान बुद्धि, धारणा करने के लिए मन भी, चिंतन भी, मंथन भी किया तब मक्खन निकला ज्ञान का। यज्ञ में एक बहुत पुरानी माता थी प्रातः 4 बजे उठके मक्खन निकालके दे देती थी। तो बाबा कहता था आओ बच्चे, मैं मक्खन रोटी खिलाऊँ जो प्यार में बैठके हमको मक्खन रोटी खिलाता था। बाबा कहता था ऐसी पालना दो जो इन्हों को अपने लौकिक बाप का घर याद न आवे। पेशेन्ट को भी खिलाने के लिए कहता था, वंडर है बाबा का। जिस माता ने सारी लाइफ बाबा को मक्खन खिलाया, अंत में बाबा सामने खड़े हो दृष्टि दे रहे थे और उस माता ने शरीर छोड़ दिया।

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

बाबा कहते जब तक यहां पर हैं, मुरली सुन रहे हैं पर जब घर जाते हैं तो भूल जाते हैं। तो यह भूलने की भूल नहीं करनी है। बाबा भूल जाए तो हमारा क्या हाल होगा! इसलिए कभी नहीं भूलना है। जीना है तो बाबा की यादों में, कोई याद न आए। मरना है तो मुझे कोई याद भी न करे, ऐसा मरें। यह शब्द जो है मुझे स्मृति में रहने के लिए एक ज्ञान का अंदर ही अंदर सिमरण करना, सिमर-सिमर सुख पाओ तो कलह-कलेश सब मिट जायेगा।

दिल से मेरा बाबा कहो, खुशी का भण्डारा खुल जायेगा

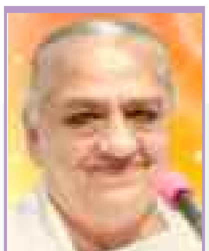

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

जब बाप और बच्चे का मिलन होता है तो कितनी खुशी दिल में अनुभव करते हैं क्योंकि मेरा बाबा है और मेरे को देख रहा है! तो सम्मुख देख करके बाबा को खुशी कितनी होती है, मेरा बाबा सिर्फ बाबा नहीं। मेरा बाबा, मेरे से मिलने के लिए आए हैं वाह! कमाल है मेरा बाबा मेरे लिये आया है, ऐसे अनुभव होता है ना? तो कोई भी मेरी चीज़ मिल जाए तो कितनी खुशी होती है। मेरा बाबा मेरे सामने आ गया। खुशी होती है ना और बाबा को भी कितनी खुशी होती है, मेरे बच्चे मेरे से मिलने आ गये और अभी तो बाबा को देख करके बाबा से मिलन मनाके दिल क्या कहती है, वाह बाबा वाह! सबकी आँखों में स्मृति में मेरापन कितना प्यारा लगता है।

सभी के दिल में कौन? मेरा बाबा, प्यारा बाबा जो कभी भूल नहीं सकता। भूल सकता है, कितनी भी कोशिश करो भूलना चाहो तो भी भूल नहीं सकता। मेरा कहते ही कितनी खुशी होती है, मेरा बाबा कहने से ही खुशी का भण्डारा खुल जाता है।

बाबा कहा, खुशी की खुराक मिल गई। तो मेरा कभी भूल ही नहीं सकता, रिवाजी छोटी-सी चीज़ भी मेरी है तो भूलना मुश्किल है। और सबसे प्यारे से प्यारी चीज़ कौन? मेरा बाबा कहा और स्वीच ऑन हुआ। सबके चेहरे ही बदल जाते हैं क्योंकि मेरे बाबा के पास जो सब प्राप्तियां हैं ना वो मेरी हैं। बाबा के पास किसके लिए हैं? हमारे लिए है। तो मेरा बाबा, मेरी मिलकियत, मेरे बाबा से मेरा खज़ाना मिल गया। यही अनुभव है ना। अभी मेरा बाबा दिल से निकल नहीं सकता। ऐसे नहीं कहते याद कैसे करें? भूलें, यह हो ही नहीं सकता। भूल कैसे सकते हैं यह क्वेश्चन उठ सकता है, याद कैसे करें वो नहीं। देखो मेरा पुराना कपड़ा भी नहीं भूलता। तो जितना मेरापन लायेंगे उतना याद सहज है।

प्रश्न : दादी, सदा खुश रहने के लिए क्या ध्यान रखें? कोई ऐसी बातें बतायें जो हमारी खुशी कभी भी गुम न हो।

उत्तर: खुशी किससे होती है, पहले यह अपने से क्वेश्चन करें कि खुशी क्यों होती है, कैसे होती है? कोई प्राप्ति है तो खुशी है। तो बाबा से जो हमको रोज़ इतना खज़ाना मिलता है, उसे याद करो तो खुशी स्थायी रहेगी। हमें तो कितना सहज बाबा मिल गया। लोग तो कहेंगे तपस्या करनी पड़ेगी, यह करना पड़ेगा, वह करना पड़ेगा, हम तो कहते हैं तपस्या तो दिल का मिलन होता है, जब भी याद करो मेरा बाबा मुश्किल लगता है? बाबा को सदा साथ रखो तो खुशी में रहेंगे।

प्रश्न: दादी, बाबा को अपना कैसे बनायें?

उत्तर: है ही बाबा अपना ना और है कौन! और है कोई? है ही मेरा बाबा ना और कोई है क्या? सिर्फ याद करें अपना हक, मेरा कहा और याद आयी। बाबा दिल में समा गया ना, जो दिल में बात समाई जाती है ना वो भूलती नहीं है। अभी देखो दुःख की बातें आती हैं तो भूलती हैं? चाहते भी हैं भूल जावें, भूलती हैं? तो हमको बाबा ने इतना सुख दिया है, खज़ाना सुख का दिया है और बाप का खज़ाना मेरा खज़ाना होता है। बाबा कहा माना खज़ाना याद है। तो सभी खुश हैं और सदा खुश रहने का भी प्रॉमिस है बाबा से। पक्का है ना।

प्रश्न: दादी, जैसे आपकी कंपनी सबको इतना खुश करती है, अभी आप बैठे हो तो सबका दिल करता है यहीं बैठे रहें, आपकी कंपनी में रहें, दादी यह हम लोगों का भी हो सकता है?

उत्तर: होता है ना, हो सकता है क्यों, होता है। अभी सेन्टर से आप आओ तो क्या लिखते हैं जब से आप गई हैं तो ऐसा हो रहा है, ऐसा हो रहा है, आता है ना। आप सदा बाबा की कम्पनी में रहो तो आपकी भी कम्पनी सबको अच्छी लगेगी।

बाकी सभी कुमार तो बहादुर है ना! पत नहीं गंवाना हमारी, ऐसे ही रहना। सदा विजयी। अमृतवेले क्या वरदान लेते हो? विजयी भव।

टीचर्स जो हैं वो मेहनत करके सेवा का रूप दिखाने के लिए आपके पास पहुंच गई हैं। देखो इन्हों के चेहरों पर खुशी कितनी है। युगल जो हैं भले घर में रहते हैं लेकिन लक्ष्य यही है कि हम बाबा के हैं, बाबा के ही रहेंगे। और कितनी खुशी होती है। एक दो से मिलते हैं तो भी बहुत खुशी होती है अरे, यह मेरा साथी है। तो सभी खुश। अच्छा है।

ये घड़ियां हैं - सम्भल के चलने की

ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

समय ज्यों-ज्यों समीप आ रहा है, चारो ओर पापकर्म विकराल रूप ले रहा है, चारो ओर नेगेटिव एनर्जी, भ्रष्टाचार, लोभ व अहंकार बढ़ा हुआ नज़र आ रहा है। दानवता सरेआम सिर उठा रही है व मानवता सिर छुपा रही है, व्याधियां बढ़ रही हैं, प्रकृति अपना स्वरूप बदल रही है, प्रेम स्वार्थ की परतों के नीचे ढ़कता जा रहा है। ऐसे में ब्रह्मा वत्सों को संभलकर चलना है।

तुम पालनकर्ता पूर्वज हो

सभी महान ब्राह्मणात्माएं अपने इस श्रेष्ठ स्वरूप को पहचानें। त्रिकालदर्शी भगवान ने हमें याद दिलाया है कि तुम पूर्वज हो, तुम सभी धर्मों की आत्माओं के पूर्वज हो। बहुत महत्वपूर्ण बात तो यह है कि तुम्हारे पुण्य कर्मों का बल सभी धर्मों की आत्माओं को मिलता है, इसलिए तुम्हें उसका पुण्य फल भी पदमगुणा मिलता है। और यदि पूर्वज आत्माओं से कोई पापकर्म या अपवित्र कृत्य होता है तो उसका प्रभाव भी सभी आत्माओं पर पड़ता है, इस कारण से उसका बुरा फल भी पदमगुणा उस कर्ता को मिलता है।

कई ब्रह्मावत्स महसूस कर रहे हैं कि अनेकों की स्थितियां बिगड़ती जा रही हैं, इसका कारण यही है कि वे सब व्यर्थ में रहे, उनसे सूक्ष्म पाप होते रहे, उन्होंने साधनाएं नहीं की। तो इसका कोई महत्व नहीं कि कौन लम्बे काल से सेवाओं में है। साधना की कमी, सूक्ष्म अपवित्रता, सूक्ष्म पाप अब उस आत्मा को ईश्वरीय सुख नहीं लेने दे रहे हैं। भगवानुवाच पर सभी ध्यान दें - तुम्हें 63 जन्मों के विकर्म नष्ट करने में समय नहीं लगता, बल्कि संगमयुग पर जो विकर्म होते हैं, उन्हें नष्ट करने में ही मेहनत व समय लगता है।

ये समय स्वयं को कहीं भी उलझाने का नहीं है

सारा संसार कहीं न कहीं उलझता ही जा रहा है। कोई सम्बन्धों में उलझ रहा है, तो कोई काम धन्धों में। किसी को विघ्न-समस्याओं ने हतोत्साहित किया है, तो किसी को अपनों से चोट पहुंची है। कोई टी.वी., इंटरनेट में भ्रमित हो गया है तो किसी को लोभ नचा रहा है। परंतु जिसे सद्विवेक प्राप्त है, जो स्वयं भगवान के स्टूडेंट हैं, जिन्हें समय की पूर्ण पहचान है और जो जन्म-जन्म के लिए ईश्वरीय खज़ानों से अपनी झोली भरना चाहते हैं, उन्हें स्वयं को कहीं भी उलझाना नहीं चाहिए।

समय के महत्व को जानना, श्रेष्ठ विवेक की निशानी है। समय एक बार हाथ से निकल जाए तो हाथ मलने के अलावा कुछ भी हाथ नहीं लगता। यूँ तो चारो युगों में हर घड़ी मूल्यवान है, तो भी इस सृष्टि चक्र में वो समय सर्वश्रेष्ठ है जब स्वयं भाग्य विधाता भगवान धरा पर अवतरित होकर मनुष्यात्माओं का श्रेष्ठ भाग्य निर्माण करते हैं। वो है पुरुषोत्तम संगमयुग। इसी काल के लिए भगवानुवाच है... तुम्हारा एक मिनट एक वर्ष तुल्य है, अर्थात् तुम एक मिनट में एक वर्ष का श्रेष्ठ भाग्य बना सकते हो।

अतः बुद्धिमानी पूर्वक ऊपर उठ जाएं आप सभी उलझनों से। उलझनें व समस्याएं तो हैं, परंतु स्वयं को उनमें धकेल देना या बाहर निकलना या पूर्णतया अनासक्त, साक्षी व उपराम होकर रहना - ये सब अपने ही हाथ में है। आप कुछ चीज़ों को स्वीकार करके हल्के हो जाएं, कुछ चीज़ों का त्याग कर मुक्त हो जाएं व कुछ बातों में साक्षी होकर न्यारे हो जाएं।

किसी भी बात का या घटना का या परिस्थिति का दुष्प्रभाव मन पर न हो

संभलें आप.... अपने मन को इतना निर्बल न कर दें कि हर बात आप पर अपना दुष्प्रभाव छोड़कर चली जाएं। बातें तो आयेंगी व जायेंगी...यदि आप मुक्त रहेंगे तो वे शीघ्र ही चली जायेंगी, परंतु यदि आप उनके अनेक विचारों में लिप्त हो गये तो वे मन में बैठ जायेंगी। इससे मुक्त होने के लिए हमें निम्न बातों पर ध्यान देना चाहिए - एक है अशरीरीपन का अभ्यास, दूसरा है स्वमान का अभ्यास, इनका बल आपको शक्तिशाली बनायेगा। स्वमान के वायब्रेशन्स के कारण कोई भी बात आपको हल्की लगेगी। साथ ही साथ अपने पास कम से कम 10 ज्ञान की शक्तिशाली प्वाइंट्स नोट करें। वे बातें ऐसी हों - जिन्हें याद करते ही आपका चित्त शांत हो जाए, जिन्हें याद करते ही अपनी शक्तियों की स्मृति आ जाए, जिन्हें याद करते ही स्थिति अचल-अडोल हो जाए। यही सत्य है कि इसके लिए ज्ञान का बल ही चाहिए। परंतु इस बात पर सभी भाई-बहनें ध्यान दें कि स्वयं को प्रभाव मुक्त रखने पर विशेष ध्यान दें अन्यथा इससे संग्रहित शक्तियां नष्ट हो जाती हैं। यदि यह हल्के व निरसंकल्प रहने की नेचर अभी से न बनाई तो विनाशकाल में मन बुरी घटनाओं से बुरी तरह विकृत हो जायेगा।

ये समय है परमात्म प्राप्तियों का व परमात्म वरदानों का

अति-अति कल्याणकारी वरदान स्वयं वरदाता ने अपनी प्रिय संतानों को दिया है। `एक कदम हिम्मत का तुम बढ़ाओ तो हज़ार कदम मैं बढ़ाऊँ'। इसे इस तरह से भी याद रखें कि हम थोड़ी भी हिम्मत रखेंगे तो बाबा की हज़ार गुणा मदद प्राप्त होगी। इस वरदान को सवेरे से सारा दिन पांच बार अवश्य याद करें। सवेरे उठने से ही इसे यूज़ करो। उठने का दृढ़ संकल्प करो तो बाबा स्वयं उठायेगा। माया के युद्ध में भी इसे यूज़ करो।

वही समय ईश्वरीय सुख व परमात्म प्रेम प्राप्त करने का है। रोज़ सोते समय अपने प्राणेश्वर पिता को उनसे मिली अनेक प्राप्तियों के लिए सच्चे दिल से धन्यवाद दें। उन्होंने हमें नव जीवन प्रदान किया, हमें सत्य ज्ञान दिया, हमें पावन बनाया, हमारे जन्म-जन्म के प्यार का रिटर्न दिया, उनकी दिल से शुक्रिया करें। मन उसके पुनीत प्रेम में मग्न हो जायेगा।

तो चलें संभलकर, उड़ें हल्के होकर और मग्न हो जाएं परमात्म प्यार में। समय घंटियां बजा रहा है, सुनें...स्वयं भगवान चेतावनी दे रहा है, ध्यान दें। ये समय अलबेलेपन में बिताने का नहीं है।

आज का पुरुषार्थ

``आज का पुरुषार्थ''- आपमें जागृति लायेगा, आपकी सोई हुई शक्तियों को जगायेगा और समस्याओं से मुक्त होने में, स्वयं को परिवर्तन करने में व पुरुषार्थ को तीव्र गति प्रदान करने में ये मददगार साबित होगा। आप प्रतिदिन इसका अध्ययन करके अपने मनोबल में वृद्धि करें।

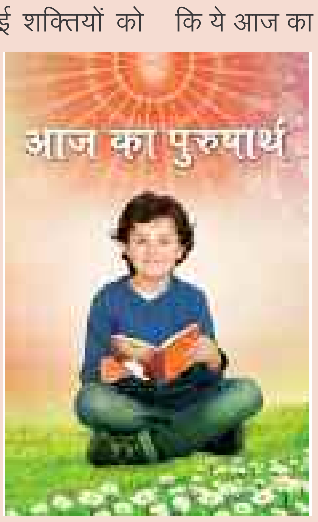

प्रतिदिन हेतु विभिन्न राजयोग के तरीके भी लिखे गए हैं। इससे योग का विषय आपके लिए आनंदकारी हो जाएगा और व्यर्थ से मुक्त रहने में तथा सहज एकाग्र चित्त होने में आपको मदद मिलेगी। इसलिए प्रतिदिन दृढ़तापूर्वक आप उनका अभ्यास अवश्य करें। हमें पूर्ण विश्वास है कि ये आज का पुरुषार्थ आपके अलौकिक जीवन में सरलता व दिव्यता लायेगा। इसपर चलने से अनेक गूढ़ धारणाएं भी सहज जीवन में अपनाई जा सकेंगी। और राजयोग के मार्ग पर चलने में आपको आनंद आयेगा। जीवन की चुनौतियां आपके मनोबल को बढ़ायेंगी और राजयोग का अभ्यास आपको प्रतिदिन प्रभु-मिलन की सुखद अनुभूति करायेगा। हमारी शुभ-भावना आपके साथ है। - *इस पुस्तक को प्राप्त करने के लिए शान्तिवन के ओमशान्ति मीडिया काउंटर से सम्पर्क करें।*

विरम्हाराजपुर-ओडिशा। सब-कलेक्टर गोपीनाथ सारका को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रणीता।

कैलिफोर्निया-यू.एस.ए.। सैन जोस स्थित फेयरमोन्ट होटल में कम्यूनिटी लीडर्स के लिए आयोजित कार्यक्रम में भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी से आध्यात्मिक चर्चा के पश्चात् चित्र में ब्र.कु. सुदर्शन कपूर,फ्रेस्नो, ब्र.कु. आत्मदयाल,मिलपिटास, ब्र.कु. संजय कादावेरू,वाशिंगटन डी.सी.।

वाराणसी-श्रीराम नगर कॉलोनी। भारत के प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र मोदी को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सरोज। साथ हैं ब्र.कु. ओ.एन. उपाध्याय।

जापान-टोक्यो। जापान, योकोहामा सेवाकेन्द्र पर 'स्वस्थ रहने के लिए सिम्पल लाइफ स्टाईल' विषय पर कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. डॉ. सविता, ब्र.कु. भाई बहनें व अन्य।

फिरोजपुर कैंट-पंजाब। डिप्युटी कमिश्नर दविन्द्र सिंह खरबन्दा को राखी बांधते हुए ब्र.कु. ऊषा। साथ हैं ब्र.कु. शक्ति।

दिल्ली-सीता राम बाज़ार। ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में डिप्युटी कमिश्नर ऑफ पुलिस परमादित्य, भिन्न-भिन्न पुलिस स्टेशन्स के प्रभारी थानाध्यक्ष, ब्र.कु. सुनीता व ब्र.कु. संगीता।

मऊ-उ.प्र.। बीज अनुसंधान निदेशालय में ज्ञानचर्चा के पश्चात् समूह चित्र में वैज्ञानिक डॉ. अमित कुमार, ब्र.कु. विमला, ब्र.कु. स्मृति, डॉ. कंचन राय व अन्य।

रशिया-सेंटपीटर्सबर्ग। 'वुमेन्स गेट टूगेदर' कार्यक्रम के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. चक्रधारी दीदी व वहां की महिलाएं।

डिबरूगढ़-असम। स्पोर्ट्स मिनिस्टर सर्वानंद सोनोवाल को राखी बांधने के पश्चात् ज्ञानचर्चा करते हुए ब्र.कु. बिनीता।

मथुरा। 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण' अभियान यात्रा के मथुरा पहुंचने पर उसका स्वागत करते हुए ब्र.कु. कमलेश बहन।

मुरादनगर। जवाहरलाल मेमोरियल गर्ल्स इंटर कॉलेज में सात अरब सत्कर्मों की महायोजना कार्यक्रम के पश्चात् वाइस प्रिन्सीपल को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. राखी। साथ हैं ब्र.कु. श्वेता, ब्र.कु. जयश्री व शिक्षकगण।

सम्बलपुर-ओडिशा। किसान सशक्तिकरण अभियान का उद्‌घाटन करते हुए ब्र.कु. राजू,माउण्ट आबू, ब्र.कु. पार्बती, ब्र.कु. नीलम, सुरेश पुजारी,नेशनल सेक्रेट्री,बी.जे.पी., अशोक मोहंती,डिप्युटी डायरेक्टर,एग्रीकल्चर व अन्य।

वाराणसी-सारनाथ। महात्मा गांधी एवं शास्त्री जयंती के अवसर पर स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत स्वच्छता अभियान का शुभारंभ करते हुए समाजसेवी भैयालाल पाल, ब्र.कु. रेखा, ब्र.कु. चंदा, ब्र.कु. प्रभा, ब्र.कु. पूनम, ब्र.कु. साधना, ब्र.कु. प्रीति, ब्र.कु. विपिन व अन्य।

पेरेन्ट्स समझें कि कहीं उनके बच्चे स्ट्रेस में तो नहीं

गतांक से आगे...

प्रश्न: अधिकतर पेरेन्ट्स यही कहते हैं कि आपके जो भी मार्क्स आयेंगे उससे मैं खुश रहूंगा। मुझे ऐसी कोई अपेक्षा नहीं है आप बस अपना काम करते रहो।

उत्तर: यह सिर्फ बोलने के लिए या फिर सोच में होता है। एक है कि आप बोल रहे हैं लेकिन अंदर से आपकी सोच और आपकी बात-चीत के ढंग से ऐसा दिखाई नहीं देता है। क्योंकि हम देख रहे हैं कि बच्चा बहुत ज़्यादा स्ट्रेस के अंदर है और आपको उसको आराम देना होगा। हम क्या कहते हैं कि कोई बात नहीं तुम पढ़ो, लेकिन क्या हमारी सोच वही है। कहीं हमारी सोच में अंतर तो नहीं है।

मैं 12वीं क्लास के एक बच्चे के घर में गयी तो उसने कहा कि मेरे ऊपर बहुत दबाव है कि मुझे आई.आई.टी. पास करना है। अभी तो उसकी प्रवेश परीक्षा ही होनी थी। तो वो कहती है कि मैं जैसे ही घर पहुंचती हूँ ना तो मेरे पिता शुरू हो जाते हैं - पढ़ो...पढ़ो... पढ़ो...यह सुन-सुनकर मैं डिप्रेशन की अवस्था में पहुंच गयी हूँ। अब वह कहती है कि पहले मैं जितना पढ़ती थी, अब मुझसे उतना भी नहीं पढ़ा जा रहा है, क्योंकि मैं सुन-सुनकर बहुत परेशान हो गयी हूँ। फिर वो कहती है कि जब मैं पढ़ने बैठती हूँ तो उनकी ही बातें दिमाग में घूमती रहती है। वह आगे कहती है कि स्कूल के बाद तो मेरा घर जाने को दिल ही नहीं करता है, क्योंकि जैसे ही घर पर पहुंचेंगे तो वो फिर से शुरू हो जायेंगे।

मैं उनके पिता से मिली और कहा कि भाई साहब! मैं जानती हूँ कि आपकी बहुत अच्छी भावना है बच्चे के प्रति। लेकिन कई बार हमें देख लेना चाहिए कि बच्चे के ऊपर इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि आपका क्या मतलब है? फिर उन्होंने कहा कि छः महीने की ही तो बात है, फिर वो खत्म हो जायेगा। माना पढ़ने के लिए सिर्फ ये छः महीना ही है। मेरे पास सिर्फ छः महीने हैं उसके ऊपर दबाव डालकर उससे परीक्षा पास करवाने का। अगर ये छः महीना मैंने नहीं बोला, नहीं करवाया तो वह पास नहीं होगा। वो ये देखने को तैयार ही नहीं हैं कि वो जो मैं जो बोल रहा हूँ, वो जो मैं एनर्जी उसे दे रहा हूँ उसका बच्चे के ऊपर क्या प्रभाव पड़ रहा है। वह तो उस बच्चे के चेहरे से दिख रहा था कि वो कितना भय में और स्ट्रेस में जी रहा था।

ब्र. कु. शिवानी

प्रश्न: पेरेंट और टीचर को यह अनुभव करना होगा कि वे सिर्फ दो सालों में ही बच्चे को मशीन जैसा बना देते हैं। मैं एक माँ से मिली थी वो कहती है कि मैं नहीं चाहती हूँ कि मेरा बेटा तनाव में जीवन जीये। उनका लड़का अभी ग्यारहवीं क्लास में पढ़ता है। वह स्कूल से तीन बजे आता है और साढ़े तीन बजे चला जाता है। वो गाड़ी से 15 किलोमीटर दूर कुछ क्लासेज़ करने जाता है, आई.आई.टी. में प्रवेश पाने के लिए। अभी तो वह 12 वीं के बाद आयेगा। वह घर से साढ़े तीन बजे निकलता है और साढ़े चार बजे क्लासेज़ के लिए पहुंचता है। फिर वह साढ़े सात-आठ बजे वापिस घर आता है। उसका रोज़ का यही रुटीन है। उसके बाद भी स्कूल में भी उसका कोचीन का एक पैटर्न है, उसको वो ठीक से पूरा नहीं कर पाता है, हर रविवार को वह अतिरिक्त क्लासेज़ के लिए वहां जाता है। उसकी माँ ने अपना सारा काम छोड़कर दो साल उसी पर ध्यान दिया। वो यह समझ ही नहीं पा रहे हैं कि आखिर वह बच्चा क्या चाहता है? कई बार तो हम बच्चे के साथ मिलकर बातचीत ही नहीं कर पाते हैं, उसको हम समझ ही नहीं सकते हैं क्या? और हम हमेशा उस पर दवाब का प्रयोग करते हैं।

उत्तर: बच्चा आगे चलकर क्या बनना चाहता है या परिवार वालों ने उसके करियर के प्रति क्या निर्णय लिया है यह हमें खुद समझना होगा। उसके लिए क्या एफर्ट करना है वो भी शायद समय की आवश्यकता है कि वो भी एफर्ट बहुत ज़्यादा करना पड़ रहा है। लेकिन उस चीज़ के साथ-साथ सिर्फ इधर ध्यान रखना है। क्योंकि जितना ज़्यादा आपको एफर्ट करना पड़ रहा है। जैसे आपने कहा कि सप्ताह के दिन में भी सुबह से रात तक शनिवार भी सुबह से रात तक.....।

- क्रमशः

स्वास्थ्य के प्रति हमारी असजगता के परिणाम

आज का मानव कहने को तो अपने आपको सर्वश्रेष्ठ, बुद्धिमान, प्रगतिशील, चिन्तक मानता है, परंतु अधिकांश व्यक्ति स्वयं के स्वास्थ्य के प्रति इतने उदासीन, उपेक्षित रहते हैं कि उनका स्वास्थ्य भाग्य के भरोसे अथवा चिकित्सकों के हाथों में होता है। आरोग्यता के नियमों का पालन किये बिना, डॉक्टरों के मधुर-मधुर आश्वासनों के सहारे स्वस्थ रहने के प्रयास में वे पूर्ण सुखी नहीं हैं। कुछ रोगों में तो दवाइयां उनके जीवन की आवश्यकता बनती जा रही हैं। संक्रामक रोगों में तो रोगी का जीवन दवा के सहारे ही चलने लगता है। इसका प्रमुख कारण रोगी विज्ञापनों, प्रदर्शनियों, डॉक्टरों की बड़ी-बड़ी डिग्रियों एवं उनके पास पड़ने वाली भीड़ से भ्रमित हो साधारण से रोगों में डॉक्टरों के सामने अन्ध श्रद्धा के कारण आत्म समर्पण कर अपनी शारीरिक क्षमताओं को तो नष्ट करते ही हैं, तात्कालिक राहत के नाम पर अज्ञानतावश स्वयं पर डॉक्टरों द्वारा किये जा रहे प्रयोगों एवं दवाओं के दुष्प्रभावों से पूर्णरूपेण बेखबर हैं। रोगी को तत्काल राहत पहुंचाने का प्रयास, दुःख को भुलाने के लिए शराब के नशे में अपना भान भुलाने के समान ही होता है। यदि आधुनिक उपचार प्रभावशाली होते तो रोगों से तत्काल राहत मिलती और आज अस्पताल खाली रहते!

पशु भले ही वेजुबान हों-बेजान नहीं हैं

किसी भी जीव को स्वस्थ रखने में दिया गया सहयोग उत्कृष्ट सेवा होती है। संवेदना जागे बिना सच्ची सेवा नहीं हो सकती। आधुनिक चिकित्सा का ज्ञान प्राप्त करने के लिए मूक, बेबस, असहाय जीवों पर विभिन्न प्रकार के प्राणघातक प्रयोग किए जाते हैं। लकड़ी में आग होती है। क्या उसको देखा जा सकता है? ठीक उसी प्रकार जानवरों के विच्छेदन से शरीर के बनावट की जानकारी तो हो सकती है, परंतु चेतना की उपेक्षा करने वाला ज्ञान कैसे पूर्ण, वास्तविक और सच्चा हो सकता है? दवाइयों के निर्माण हेतु जीवों के अवयवों का बिना किसी परहेज उपयोग होता है। औषधियों के परीक्षण हेतु जीवों को यातनाएं दी जाती हैं। उनकी मान्यतानुसार मनुष्य के लिए सभी अपराध क्षमा होते हैं। क्या आपने कभी सोचा, आपके दुःख, दर्द, रोग अथवा पीड़ा का क्या कारण है? यह तो आपके ही किए की प्रतिक्रिया है। ``क्रिया की प्रतिक्रिया'' तो इस सृष्टि का सनातन सिद्धान्त है। हमने अतीत जीवन में या जन्मों में किसी को मारा है, पीटा है, सताया है, रुलाया है, प्रताड़ित किया है, उसी की सजा के रूप में रोग आते हैं। स्पष्ट है रोग का कारण हमारी क्रूरता, कठोरता, कामुकता से जुड़ा हुआ है। मस्तिष्क में अविवेक एवं प्राणिमात्र के प्रति अशुभ चिन्तन सबसे बड़ा ब्रेन हेमरेज है तथा हृदय में दया, करुणा नहीं होना सबसे बड़ी हार्ट ट्रबल है। अपराध करने, करवाने और करने में सहयोग देने वाले प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में अपराधी होते हैं। हिंसा को प्रोत्साहन देने वालों की संवेदना प्रायः प्राणि मात्र के प्रति विकसित नहीं होती। इसी कारण आधुनिक चिकित्सक अपेक्षाकृत कम संवेदनशील होते हैं। रोग का सही निदान न जानने के बावजूद अपनी गलती न स्वीकार कर येन-केन-प्रकारेण रोगों को दबा वाहवाही लूट न केवल अपने अहं का पोषण करते है, अपितु रोगी को प्रयोगशाला बना अपना स्वार्थ साधते हैं। अतः दुःख से बचने वालों को अन्य प्राणियों को दुःखी बनाने में प्रत्यक्ष-परोक्ष रूप से सहयोगी नहीं बनना चाहिए। सेवा कर्म निर्जरा का सशक्त माध्यम है और हिंसा कर्म बंधन का प्रमुख कारण। अतः सेवा के साथ साधन और सामग्री की पवित्रता आवश्यक होती है, उसके अभाव में की गई सेवा घाटे का सौदा है।

बहुत ही सहज है राजयोग...

सभी कहते हैं कि मेरा काफी दिनों से इलाज चल रहा है, मैं ठीक नहीं हो पा रहा हूँ। आज तक तकनीकी रूप से सक्षम होने के बावजूद भी हम स्वस्थ नहीं हैं, कहीं हम गलत भ्रांति में तो नहीं जी रहे हैं। बात ठीक भी है क्योंकि आपके स्वास्थ्य पर आपके गुणों का प्रभाव पड़ता है। यदि आप गुणी हैं तो आप सम्पूर्ण रूप से स्वस्थ हैं। इसे चाहे तो आप अपने आस-पास लोगों को देखकर अंदाज़ा लगा सकते हैं।

गतांक से आगे...

सुख या खुशी

सुख या खुशी का सम्बन्ध हमारे शरीर के अग्नि तत्व से है। अर्थात् शरीर के सिस्टम को यदि देखें तो इसका सम्बन्ध हमारे पाचन तन्त्र से है। जब हमारा मन या हम बहुत खुश होते हैं या यूं कहें कि सुखी होते हैं, तब हमारा पाचन तन्त्र बहुत अच्छा कार्य करता है। लेकिन जब हम गुस्से में हों या अशांत हों या दु:खी हों या नाराज़ हों या हमारे अन्दर ईर्ष्या, द्वेष, नफरत आदि दुर्भावनाएं हों तो हमारा पाचन तन्त्र सुचारू रूप से कार्य नहीं करता। आपने छोटे बच्चों को अगर देखा हो तो उनका पेट बहुत कम खराब होता है क्योंकि वो खुश बहुत रहते हैं। आज हमारी खुशी कम होने के कारण ही हमारे शरीर में अनेकानेक बीमारियों ने जन्म ले लिया है। सुख या खुशी का रंग भी पीला होता है इसलिए सभी लोग पीले फल को पेट के लिए अच्छा मानते हैं। आज खुश न रहने के कारण ही इन्सुलिन बनना बन्द हो गया है, इसलिए लोग आज डायबिटिक पेशेन्ट या शुगर के मरीज हैं। खुश रहिए तो आपका पाचन तन्त्र वैसे ही ठीक हो जायेगा।

आनंद

आनंद का सम्बन्ध हमारे प्रकृति के छठे तत्व या ब्रह्म तत्व के साथ है। आज हमारे अंदर आलस्य बढ़ गया है जिसके कारण हम अपनी रचनात्मकता को भूल चुके हैं। आलस्य के कारण ही आज कोई भी आनंदित नहीं रहता। यदि आप कुछ साल पहले की सीन को अपने सामने लायें तो उस समय हर कार्य व्यक्ति आनंदित होकर करता था क्योंकि वो काम को काम नहीं समझता था बल्कि उसे प्यार करता था इसलिए आनंद महसूस करता था। आज हम मजदूर हो गये हैं, हमें जो कार्य बता दिया जाता है वो हम कर लेते हैं, उसके बाद नीरस (बोरियत) होकर बैठ जाते हैं। इससे हमारे अंदर की ग्रंथियों के अंदर उचित रूप से हॉरमोन्स पैदा नहीं होते जिससे हम आलसी महसूस करते हैं। इसलिए यदि हम रचनात्मकता (क्रियेटिविटी) को अपना लें तो हम कभी भी आनंद से दूर नहीं रहेंगे, हमें हर कार्य में आनंद आयेगा। आनंद का कुछ भी विपरीतार्थक शब्द नहीं होता, आनंद अपने आप में आनंद है। इसका रंग पर्पल या जामुनी होता है, तो आनंदित रहिये और आलस्य को दूर भगाइये। - क्रमश:

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-10

1			2		3	■	■		■
	■	■		■		■	■	5	6
7		■		■	8	9	10		
	■	11		12	■	13			■
■	■		■	14		■	■	■	15
16	17		■		■	18		19	
■		■	20		■		■		■
■	21			■	22		■	23	24
25	■	■	■	26		■	27		
28		■	29		■	30		■	

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

1. ....होता हमको ऐसा बार-बार है (4)
2. मृत्यु का देवता (4)
3. समाप्त, खत्म (3)
4. शोभा, सजावट, आभूषण (4)
6. निराकार बाबा आ जाओ हमारी जैसी....में (2)
9. हया, शर्म, इज्जत (2)
10. जिद, अटल संकल्प, दृढ़ प्रतिज्ञा (2)
11. कलियुगी दुनिया का....फिर नई दुनिया की स्थापना (3)
12. यज्ञी, यज्ञ कराने वाला व्यक्ति (4)
15. ठाठ-बाठ, वैभव, मान-मर्यादा (2)
17. कौरवों का मामा (3)
18. सतयुग में ....की दरकार नहीं होती (3)
19. नौकर-चाकर, सेवक-सेविकायें (2-2)
20. विशेष, विशिष्ट, मुख्य (2)
22. दोजक, जहन्नुम, हेल (2)
24. मानसिक,...वाचा-कर्मणा सबको सुख देना है (3)
25. .... तेरे नयनों में छलके वही प्यार (2)
26. धन, मतलब (2)
27. बयार, वायु, समीर (2)

बायें से दायें

1. ....पूछना है तो गोप-गोपियों से पूछो (6)
5. रावण की नगरी, सीलांग (2)
7. डर, खौफ (2)
8. वजीर, राय देने वाला (5)
11. जीत, सफलता (3)
13. कठोर, पुराना, पेट (3)
14. रटना, जपना, साधना की एक विधि (2)
16. विकारी, पतित, तमोप्रधान (3)
18. वरदाता बन बाप रोज़....देते हैं, आशीर्वाद (4)
20. खज़ाना, खदान (2)
21. रस-हीन, शुष्क, फीका (3)
22. ... से नारायण नारी से लक्ष्मी (2)
23. मूल्य, कीमत (2)
26. रस, सत, निचोड़ (2)
27. खूबसूरत, तुमसा...बाबा कोई नहीं जहां में (3)
28. वचन, कथन, बोल (2)
29. बेकार, फालतू (2)
30. इलाज, औषधि (2)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन

जोधपुर-राज.। ज्ञानचर्चा के पश्चात् नगर निगम के महापौर घनश्याम ओझा को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका व ज्ञानामृत भेंट करते हुए ब्र.कु. राणमल। साथ हैं वार्ड पार्षद पायल बहन व अन्य।

लाडवा-हरियाणा। विधायक पवन सैनी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. ज्योति। साथ हैं ब्र.कु. सरोज।

असम-गोपालपारा। 'अखिल भारतीय किसान सशक्तिकरण अभियान' के उद्घाटन अवसर पर उपस्थित हैं बायें से ब्र.कु. भवानी, ब्र.कु. शीला, ब्र.कु. दीपांजली, डॉ. ज्ञानन शर्मा, एस.पी. नितिन गोगोई व अन्य।

मंडी-अदमपुर। ब्रह्माकुमारीज़ के शिक्षा प्रभाग द्वारा आयोजित कार्यक्रम में एस.एच.ओ. जयभवन बोकशेर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सावित्री। साथ हैं ब्र.कु. सीमा व ब्र.कु. कविता।

नांगल डैम-पंजाब। ज्ञानचर्चा के पश्चात् ए.के.बाली,चीफ इंजीनियर,इर्रीगेशन, भाखरा डैम व श्रीमती बाली को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. रीमा। साथ हैं ब्र.कु. नीतू, ब्र.कु. रामप्रकाश व अन्य।

सिरसा-हरियाणा। 'मन को साफ और पृथ्वी को हरा भरा बनाएं एवं राजयोग द्वारा स्वस्थ एवं खुशनुम: जीवन अभियान' के सिरसा पहुंचने पर आयोजित कार्यक्रम में चौधरी देवीलाल विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार असीम मिगलानी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. बिन्दू, ब्र.कु. स्वामीनाथन, ब्र.कु. सीमा व ब्र.कु. पीयूष।

मोहाली। 'मूल्यनिष्ठ शिक्षा अभियान' के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में पंजाब के शिक्षामंत्री डॉ. दलजीत सिंह चीमा को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रेमलता।

संगम भवन-आबू रोड। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर आयोजित चैतन्य झाँकी का उद्घाटन करते हुए नगरपालिका अध्यक्ष सुरेश सिंदल, ब्र.कु. भरत, ब्र.कु. बिलास व ब्र.कु. देवु।

झखनी-उधमपुर। सी.आर.पी.एफ. के 137वीं बटालियन में दो दिवसीय राजयोग मेडिटेशन कैम्प के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. डॉ.जमिला,नेचरोपैथिस्ट,माउण्ट आबू। साथ हैं तीन डिप्युटी कमांडेंट्स नीलम भुटयाल, अनिल शेखावत, राजिन्दर पॉल व ब्र.कु. ममता।

फगवाड़ा-पंजाब। लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी की चांसलर रश्मि मित्तल को राखी बांधने के बाद ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. सुमन।

गोपालगंज-बिहार। आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी एवं निःशुल्क चिकित्सा शिविर कार्यक्रम में डॉक्टरों की टीम के साथ ईश्वरीय स्मृति में ब्र.कु. अंगूर बहन, कॉर्पोरेटिव बैंक के अधिकारी, गणेश भाई व अन्य।

मोहम्मदी-उ.प्र.। बाल व्यक्तित्व विकास शिविर के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. अनुराधा, प्रतिभागी बच्चे व अन्य।

दीपावली पर्व का रहस्य

हर वर्ष त्योहार मनाते हुए भी हम जिस बात की कामना रखते हैं कि हमारे घरों में लक्ष्मी आयेगी, जिसलिए हम लोग अपने घरों की सफाई करते, दीपक जलाते तथा पूजन कर लक्ष्मी का आह्वान करते हैं। परन्तु इतना नहीं समझते कि एक तरफ तो लक्ष्मी का वाहन उल्लू को दिखाते हैं और दूसरी तरफ दीपक जलाकर लक्ष्मी का आह्वान करते हैं, परन्तु विचार करने की बात है जब उल्लू को रोशनी में कुछ दिखाई ही नहीं देता तो लक्ष्मी आयेगी कैसे? वह तो हमसे दूर भाग जायेगी।

दीपावली आई दीप जलाओ
परमपिता से मिलन मनाओ
संगम के इस पावन युग में
ज्ञान से आत्म-ज्योति जगाओ।

बड़े आश्चर्य की बात है कि दीपावली का त्योहार भारतवर्ष में बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है। इसे हम सभी भारतवासी हर वर्ष बड़ी ही धूमधाम से मनाते आये हैं। लेकिन बजाय सम्पन्न होने के और ही कंगाल होते आये हैं। अतः परमपिता परमात्मा अब कहते हैं कि बच्चों, घरों की सफाई करना या दीपक आदि जलाना तो साधारण-सी बात है। परन्तु कलियुग के अंत और सतयुग के आदि के बीच के वर्तमान कल्याणकारी पुरुषोत्तम संगम युग पर दीपावली का वास्तविक रहस्य है कि हे बच्चों! यदि वास्तविक लक्ष्मी को बुलाना चाहते हो या श्री लक्ष्मी श्री नारायण के राज्य की स्थापना करना चाहते हो तो तुम्हें श्री लक्ष्मी के समान दैवी गुण अपने जीवन में धारण करने होंगे। जब तक तुम बच्चे अपने आत्मा रूपी घरों से इन 5 विकारों रूपी मैल को नहीं निकालते अर्थात् जब तक आत्मा को ज्ञान प्रकाश नहीं मिलता तब तक श्री लक्ष्मी और श्री नारायण का राज्य स्थापन नहीं हो सकता और सही अर्थों में दीपावली नहीं हो सकती है।

सच्ची दीपावली

क्या आपने कभी विचार किया है कि श्री लक्ष्मी के स्वागत के लिए प्रति वर्ष दीपमाला जलाकर भी भारतवर्ष क्यों दरिद्र हो गया है? जगमगाते दीपों को देखकर भी श्री लक्ष्मी क्यों हमसे रूठ गयी हैं? जलते हुए दीप उनको आकृष्ट क्यों नहीं कर पाते? वे कौन-सा दीप जलाना चाहती हैं? वस्तुतः आत्मा ही सच्चा दीपक है। विकारों के वशीभूत हो जाने के कारण आत्मा का प्रकाश आज मलिन हो गया है। मनुष्य की अंतरात्मा तमसाच्छन्न है। ऐसे विकारी मनुष्यों के बीच श्री लक्ष्मी का शुभागमन कैसे हो सकता है? लेकिन कितनी विडम्बना है कि आत्म-दीप प्रज्वलित कर कमल पुष्प सदृश अनासक्त बन कमलासीन श्री लक्ष्मी का आह्वान करने की जगह हम मिट्टी के दीप जलाकर बच्चों का खेल खेलते रहते हैं।

अमावस्या की काली रात्रि की तरह आज चतुर्दिक घोर अज्ञान अंधकार छाया हुआ है। कहीं कुछ सूझ नहीं रहा है। मत-मतांतर के जाल में मानव मात्र भ्रमित है। सभी आत्माओं की ज्योति बुझ चुकी है। ऐसे समय में सदा जागती ज्योति निराकार परमपिता परमात्मा शिव सर्वात्माओं की ज्योति जगाने के लिए कल्प पूर्व की भांति इस धराधाम पर अवतरित हो चुके हैं और प्रायः लोक गीता ज्ञान तथा सहज राजयोग की शिक्षा दे रहे हैं। निर्विकारी बन उस सदा जागती ज्योति से अपनी आत्मा का दीपक जगाकर ही हम सच्ची दीपावली मना सकते हैं। तब ही इस देवभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना होगी जहां रत्न जड़ित स्वर्ण महल होंगे और घी-दूध की नदियां बहेंगी। इस युगांतकारी घटना की पावन स्मृति में ही हम दीपावली का त्योहार मनाते हैं। इस अवसर पर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव का प्रतीक एक बड़ा दीप जलाया जाता है और उसी से अन्य दीपकों की ज्योति जलाई जाती है। अन्य किसी देवता के मंदिर में सदा दीप नहीं जलता है, लेकिन आज भी भगवान् विश्वनाथ के मंदिर में अनवरत दीप जलता रहता है क्योंकि एक मात्र निराकार परमात्मा शिव ही सदा जागती ज्योति हैं।

पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार समाप्त

हमारे पुराने आसुरी स्वभाव, संस्कार और सम्बन्ध समाप्त हो जाते हैं तथा नये दैवी स्वभाव, संस्कार और सम्बन्ध बनते हैं। इसी की स्मृति में व्यापारी इस दिन पुराने खाते को बंद कर नया खाता खोलते हैं। अवढ़र दानी, भोलानाथ भगवान शिव के साथ व्यापार करने वाले आध्यात्मिक साधकों का परम कर्त्तव्य है कि अब वे आसुरी अवगुणों का खाता बंद कर दैवी गुणों के लेन-देन का खाता खोलें जिससे आगामी सतयुगी सृष्टि में वे श्री लक्ष्मी का वरण कर सकें।

जुआ खेलने का महत्व

दीपावली के दिन जुआ खेलने का बहुत महत्व है। कहते हैं कि जो इस दिन जुआ नहीं खेलता उसकी अधम-गति होती है। इसका भी गम्भीर आध्यात्मिक रहस्य है। जुए में कुछ सम्पत्ति हम दाँव पर लगाते हैं जो कई गुना होकर हमें मिलती है। पावन सतोप्रधान सतयुगी सृष्टि के स्थापनार्थ जब पतित पावन परमात्मा शिव इस सृष्टि पर अवतरित होते हैं तो वे हम जीवात्माओं को आदेश देते हैं कि अपने कौड़ी तुल्य तन-मन-धन को ईश्वरीय सेवा में लगा दो तो 21 जन्मों के लिए तुमको कंचन काया, सतोप्रधान मन और अखुट धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। धन्य हैं वे नर-नारी जो इसकल्याणकारी पुरुषोत्तम संगमयुग पर ऐसा ईश्वरीय जुआ खेलते हैं। बाकी तो सभी `विषय-सागर' में गोता खाने वाले अधम और पशु-तुल्य हैं।

आइये, अब हम प्रतिज्ञा करें कि ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा द्वारा मन-मंदिर की सफाई कर सदा जागती ज्योति निराकार परमात्मा शिव से आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करेंगे, आसुरी अवगुणों और संस्कारों का खाता बंद कर दैवी गुण सम्पन्न बनेंगे तथा अपने तन-मन-धन को मानव मात्र के आध्यात्मिक उत्थान में लगा देंगे। फिर तो इस पुण्यभूमि भारतवर्ष पर श्री लक्ष्मी-श्री नारायण के दैवी स्वराज्य की पुनर्स्थापना हो जायेगी। इतना महान अंतर है मिट्टी के जड़ दीप जलाने और चैतन्य आत्मा की ज्योति प्रज्वलित करने में। आत्म ज्ञान का दीप जलायें,

नित्य मनायें प्रभु मिलन।
दिव्य गुणों की दीपावली से
चमक उठे हर घर-आंगन।।

- ब्र.कु. नेहा,मुम्बई

मिली रंधावा दम्पत्ति को, अमूल्य आध्यात्मिक सम्पत्ति

अनुभव

ठीक क्या है? वो यहाँ आकर पता चला। समझ आई कि ठीक क्या है? समझ आई कि लाइफ क्या है और ड्रामा में हमारा पार्ट क्या है। और कैसे ये ड्रामा चल रहा है। सभी लोग जो हमसे मिलते हैं या हम लोगों से मिलते हैं किसी का काम कैसे होता है, कोई अच्छे काम कर रहे हैं या बुरे काम रहे हैं। तो उन सभी का हिसाब-किताब चुक्तू हो रहा है, वो हमें पता चला। तो हमने इन्ट्रोस्पेक्शन से अपने अन्दर देखा कि जो-जो कुरीतियाँ हैं उसे इवैल्युलेट करना शुरु किया। तो करते-करते वो स्वभाव भी बदल गया, लोगों से व्यवहार भी बदल गया, चाल-चलन भी बदल गयी। तो सबकुछ बदल गया। ऐसा स्काउटिंग एंड गाइडिंग के स्टेट चीफ सद्धू सिंह रंधाव,पंजाब यूनीवर्सिटी चण्डीगढ़ व उनकी धर्मपत्नी का कहना है....

स्काउटिंग एंड गाइडिंग का स्टेट चीफ सद्धू सिंह रंधाव, जो कि पंजाब यूनीवर्सिटी चण्डीगढ़ में कार्यरत हैं। इससे पहले एज्युकेशन डिपार्टमेंट में 1978 से काम करते हुए अलग-अलग पदों पर जैसे टीचर, हेडमास्टर, प्रिन्सीपल, डिप्युटी डायरेक्टर, डायरेक्टर आदि सभी ओहदे या पोस्ट पर कार्यरत रहे। उन्होंने शान्तिवन के इंटरनेशनल कॉन्फ्रेन्स में आकर यहां की व्यवस्था को देखा, समझा और अपने अनुभव को ओमशान्ति मीडिया से हुई बातचीत में सांझा किया, जिसके कुछ अंश यहां प्रस्तुत हैं।

प्रश्न: आध्यात्मिक यात्रा की शुरुआत कैसे हुई?

उत्तर: जिस समय मैं डायरेक्टर एज्युकेशन ऑफ पंजाब था। मुझे पता चला कि दोपहर को जब लंच ब्रेक होती है तब मेरे ऑफिस के कुछ लोग कहीं जाते हैं। तो एक दिन मैंने पूछा कि कहाँ जाते हैं ये लोग, तो उन्होंने बताया कि यहाँ एक क्लास होती है तो बोला कि सर आप भी जा सकते हैं। तो मैं उनके साथ एक दिन गया। तो दोपहर की क्लास मैंने की। दीदी जो क्लास कराते थे, मुझे लगा कि इस बहन को मैं कहीं मिला हूँ तो मैं जाना शुरु कर दिया ।

मैंने अपनी युगल को बताया कि ऐसा लगता है वो दीदी मुझे कहीं ना कहीं मिले हैं। तो मैंने पुरानी फोटो निकालने शुरु किये तो एक 1976 की फोटो मिली, ग्रुप फोटो जिसमें वो लड़कियां थीं वो मेरी क्लास फैलो निकली। तो फिर मैंने उसको बताया तो अच्छी तरह जाना शुरु कर दिया, जो मेरी हेज़ीटेशन थी वो खत्म हो गई, तो हमने खुलकर इस पर चर्चा की, और जो मेरे प्रश्न थे सभी का जवाब बाबा के ज्ञान से मिलना ही था।

प्रश्न: भक्ति और ज्ञान में कुछ अन्तर लगा?

उत्तर: कुलजिंदर जो मेरी युगल हैं ये भी खासकर के सुखमनी साहब, जपजी साहब का पाठ करती थी। जो पाठ करते थे उनमें बहुत-सी जो ज्ञान की बातें हैं वो जब बाबा का ज्ञान मिला तब क्लीयर हुई कि उसमें क्या लिखा है। पहले तो हम पाठ ही करते थे, रटन करते थे। उसकी क्लीयेरिटी आने से मुझे और भी अच्छा लगा। तो फिर पता चला कि ये प्रैक्टिकली है। और प्रैक्टिकली हम इनको कैसे लागू कर सकते हैं। कीर्तन में मुग्ध होते थे। कीर्तन हो रहा है। या तो सो जाते थे या मन कहीं और भटकता था। मन को कहाँ लगाना है? किससे लगाना है? कीर्तन का मन से क्या सम्बंध है? ये तो क्लीयर ही नहीं था। तो जाना कहाँ है और किसके साथ मन लगाना है? यही समझ नहीं थी। बिल्कुल भी नहीं थी। तो फिर पता चला कि योग जोड़ना किससे है, ये बात क्लीयर हुई है।

प्रश्न: पहले से आपको क्या लगा जो आपके स्वभाव में परिवर्तन आया?

उत्तर: जैसे क्रोध आ जाता था कि लोग ये ठीक नहीं कर रहे तो उसको ठीक कराना है तो क्रोध से ठीक कराते थे। गुस्सा होकर या पनिशमेंट देकर और कोई जो नेगेटिव करा सकते थे तो नेगेटिविटी से ठीक करवाना चाहते थे। टाइम बींग लगता था कि वो ठीक हो गया है लेकिन अन्दर से वो लोग और गुस्सा हो जाते थे और उससे भी बड़ा गलत काम करते थे। तो और ज्यादा नुकसान हो जाता था। तो अब मेरे ऑफिस वाले कहने लगे कि सर आप तो कोई कोर्ट केस भी आ जाये, इतनी बड़ी कोई प्रॉब्लम भी आ जाये, पूरे डिपार्टमेंट पंजाब की थी फिर भी आप नहीं घबराते, लाइटली लेते हो। और बड़े आराम से डिक्टेट करा देते हो, केस का समाधान ये है। पहले कोई ऑफिस में आने से पहले थोड़ा घबराते थे, सोच-समझकर आते थे, लेकिन अब ऐसा नहीं है। अब किसी को कोई प्रॉब्लम है तो सीधे आके मिल भी लेते हैं, बैठते हैं और बातें सुनना भी पसन्द करते हैं। ज्ञान की बातें चल रही हैं। एक भाई कोई आया है या बहन आई है तो दूसरे भी आकर बैठ जाते हैं। तो बोले ये तो सत्संग हो गया सर। तो वे बोलते हैं कि ये तो जैसे कोई सत्संग हो गया।

प्रश्न : कोई अच्छा अनुभव बाबा के साथ?

उत्तर : कभी कोई प्रॉब्लम आती है तो मैं उससे डरता नहीं हूँ जबकि पहले मैं उससे डर जाता था कि क्या होगा, क्या होगा। कोई कोर्ट केस है या कोई प्रॉब्लम आ गई है या कोई बड़ी प्रॉब्लम आ गई है तो सोचते हैं कि बाबा अपने आप कर देगा, और निश्चिंत हो जाते हैं। और वो वैसे ही होता है। पता भी नहीं चलता वो कब ठीक हो जाता है।

मधुबन आने के बाद जब ज्ञान सरोवर में आशा दीदी से मिले। तो दीदी ने मुझे वरदान दिया और बाहर आते ही वो सिद्ध हो गया। दीदी ने मुझसे कहा कि आप इतनी अच्छी सेवायें कर रहे हो, आप बढ़ रहे हो और हमेशा आगे बढ़ते ही रहेंगे। उनसे बात करने के थोड़ी देर बाद ही मुझे चण्डीगढ़ से फोन आ गया कि आपका प्रमोशन कर दिया गया है, आप आज ही आकर ज्वाइन कर लो। जिस प्रमोशन के लिए हम काफी समय से कोशिश कर रहे थे और नहीं हो पा रहा था, वो यहां आने के बाद हो गया। मुख्यमंत्री द्वारा फाइल भी क्लीयर हो गई।

प्रश्न: बाबा की सेवा के लिए आप क्या कर रहे हैं।

उत्तर: हमने अगेंस्ट वल्गेरिटी एंड वायलेन्स, जो हमारा सभ्याचार हैं, हमारे गीत हैं, वीडियोज़ हैं, फिल्में हैं उसमें जो वल्गेरिटी और वायलेन्स है उसे खत्म करने के लिए, उसके अगेंस्ट आवाज़ उठाने के लिए एक प्रोजक्ट चलाया है। बच्चों को न केवल उसे पसन्द नहीं करना है, बल्कि उन्हें रिजेक्ट करना है। उसका विकल्प भी लेकर आना है जैसे कोई अच्छे गीत बनाने हैं, कोई अच्छी वीडियो बनानी है तो वो भी उस प्रोजक्ट के निहित किया जायेगा।

परमात्मा से मिली समस्या के समाधान की शक्ति

श्रीमती रंधावा : मेरा नाम कुलजिंदर कौर रंधावा है। मैं गवर्नमेंट सीनियर सेकेन्डरी स्कूल में अंग्रेजी में लेक्चरार के पद पर लगी हूँ। पहले मुझे किसी भी काम को करने में बहुत डर रहता था और जब कभी भी कोई प्रॉब्लम आती थी तो उसको मैं फेस नहीं कर पाती थी। लेकिन जब से मैं इस ज्ञान से जुड़ी हूँ या माउंट आबू आने लगी हूँ या क्लास करने लगी हूँ तो मुझमें कॉन्फीडेंस आ गया है। अब कोई भी प्रॉब्लम आ जाये तो मुझे लगता है कि बाबा मेरे साथ है और मैं इस प्रॉब्लम को हल कर लूंगी। 2006 से हम दोनों साथ ही इस संस्था से जुड़े हैं। जो मेरा स्कूल है वहाँ भी सबको पता है कि मैं ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ी हुई हूँ। स्कूल में भी जब किसी को कोई प्रॉब्लम हो जाती है, तो वो मेरे पास आ जाते हैं कि मेरे पास उनकी समस्या का हल मिलेगा। तो उस समय परमात्मा से ही मुझे कोई ऐसी शक्ति मिलती है कि उसकी प्रॉब्लम को हल्का कर देती हूँ।

कण्डेला-उ.प्र.। राज्यपाल रामनाईक जी व सांसद हुकुम सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. बबिता।

फतेहगढ़-उ.प्र.। पत्रकारों को योग भट्ठी कराने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. सूर्य, ब्र.कु. सुमन व पत्रकारगण।

कुल्लू-हि.प्र.। लाईस्किल एज्युकेशन कैम्प के समापन समारोह में सम्बोधित करते हुए नगर परिषद अध्यक्ष ऋषभ कालिया। मंचासीन हैं रोट्री क्लब प्रेसीडेंट सुखदेव मसीह, चंडीगढ़ से ब्र.कु. गौरव, ब्र.कु. राजेन्द्र बहन व अन्य।

गुरसहायगंज-उ.प्र.। विधायक अरविंद यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. नीलम। साथ हैं प्रधानाचार्य पंचकली जी।

रावर्ट्सगंज। डिस्ट्रीक्ट जज धर्मवीर सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु. सुमन। साथ हैं ब्र.कु. प्रतिभा।

बोकारो-स्टील सिटी। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आयोजित रंगारंग कार्यक्रम में भाग लेने वाले बच्चों के साथ सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. कुसुम, ब्र.कु. सुमन, ब्र.कु. मायाराम व अन्य।

बड़ों के संस्कार से संस्कारित होते बच्चे

गतांक से आगे...

अभी यदि मेरी माँ आकर के मुझे डांट लगाती है, कि तू अपने आप क्यों खड़ा हुआ कहीं लग जाती तो, तब एक भी आँसू नहीं गिरेगा। रोता है, तो माँ आकर के क्या करती है, वह बच्चे को उठा लेती है। कहती है नहीं बेटा.... ये तेरा दोष नहीं है। ये टेबल ही ऐसा है और उस टेबल को एक थप्पड़ मार देती है। ये ज़मीन ही ऐसी है, ये चीज़ ही ऐसी है और उसको थप्पड़ मारती है। तो वो बच्चा शांत हो जाता है और अंदर में मुस्कराता है कि दोष टल गया। माना मैं ज़िम्मेवार नहीं हूँ। वहाँ से इस संस्कार को पक्का कर लेता है कि जीवन में कभी भी कुछ हो जाये ना, तो दोष दूसरों के ऊपर डाल देना है। इसलिए आज भी किसी व्यक्ति से गलती हो जाती है तो वो क्या करता है.. ? रोता नहीं है, लेकिन चिल्लाना चालू कर देता है। बहुत ज़ोर-ज़ोर से गुस्सा करना शुरु करेगा। ये सेल्फ डिफेंस है। गुस्सा करने वाला व्यक्ति वास्तव में अपना दोष छिपाना चाहता है कि मेरा दोष नहीं है। हाँ, दस लोगों ने गुस्सा करने वाले व्यक्ति को आकर कह दिया कि अच्छा किया आपने उसको पाठ पढ़ाया। तो वह शांत हो जाता है कि दोष टल गया। ज़िंदगी भर हम इसी मनोवृत्ति के साथ जीते हैं। जब कोई नहीं मिलता है दोष डालने के लिए, तो क्या कहते हैं कि भगवान दोषी है। दोष भगवान के ऊपर डाल दिया अर्थात् कभी भी हम वो उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना नहीं चाहते हैं। कितना भय है मनुष्य में, लेकिन क्या उससे वह छूट जायेगा? दोष भगवान के ऊपर डाल देने से क्या वह छूट जायेगा? कभी नहीं। इसलिए कर्म का फल तो भोगना ही पड़ेगा। चाहे उसने भगवान पर दोष डाला अपने मन को सांत्वना देने के लिए कि मैं निर्दोष हूँ। ये समझने के लिए है, लेकिन इससे वो निर्दोष नहीं हो जाता है। इसलिए गीता में भगवान ने अर्जुन से ये बात कही कि हर व्यक्ति जो कर्म करता है, उसके लिए वह खुद ज़िम्मेवार है। इंसान का जब जन्म होता है तो ईश्वर से उसको दो गिफ्ट मिलती है। सबसे पहली गिफ्ट मिलती है, विवेक युक्त बुद्धि। जो सही और गलत को समझ सकती है। आज एक छोटे बच्चे के आगे भी आप झूठ बोलकर के देखो, वो बच्चा तुरंत आप से कहेगा, आपने झूठ बोला ना! लेकिन उस वक्त उसको हम क्या कहते हैं। चुप बैठ, तू समझता नहीं है और जितनी बार हमने उसको कहा चुप बैठ समझता नहीं है तो उतनी बार हमने उसके विवेक को मारा। जब विवेक को ही मार दिया तब वो सोचता है कि यही सच है। झूठ बोलना, यही वास्तविकता है। इसलिए वो भी झूठ बोलना प्रारम्भ करता है। जब वो झूठ बोलता है, तब हम कहते हैं झूठ बोलता है, कहाँ से सीख कर आया है? कहता है आप से ही तो सीखा हूँ। कैसी मनुष्य की विचारधारा है, कैसी उसकी सोच है। अगर कभी-कभी साक्षी होकर के इस दृश्य को देखें ना तो हंसी भी आती है कि मनुष्य कितनी अज्ञानता वश चलकर ही जीवन में कर्म करता है। जबकि भगवान ने उसको विवेक युक्त बुद्धि दी है।

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-राजयोग शिक्षिका ब्र.कु.उषा

दूसरी गिफ्ट स्वतंत्रता की दी। ये दो गिफ्ट ईश्वर से प्राप्त कर आत्मा इस संसार में आती है। जिस विवेक युक्त बुद्धि से सही क्या है, गलत क्या है, इसको पहचान सकती है। फिर स्वतंत्रता जो उसके पास है, उसके आधार पर क्या करना है, क्या नहीं करना है, उसके लिए वो खुद स्वतंत्र है। उसके लिए कोई ज़िम्मेवार नहीं है।

– क्रमशः

दीप आप हैं... - पेज 2 का शेष

हमें बुराई की शरण में जाने से बचा लेते हैं।

समुद्र मंथन द्वारा लक्ष्मी व धन्वन्तरी का अवतरण

साथ ही दीपावली के दिन समुद्र मंथन द्वारा लक्ष्मी व धन्वन्तरी का अवतरण यह सिद्ध करता है कि जो ज्ञान हमें परमात्मा पिता शिव देते हैं, जो श्रीमत वे हमें देते हैं, यदि हम उस श्रीमत पर चलते रहें, उनके दिये हुये अमूल्य ज्ञान रत्नों का मंथन करते रहें तो हम भी श्री लक्ष्मी के समान बन उस आने वाली दीपों से सजी, जगमगाती दुनिया में जाने लायक बन जायेंगे और धन तो क्या वहां कोई अप्राप्त वस्तु ही नहीं होगी। ये सारी प्रकृति, वस्तु, वैभव हम देवी-देवताओं के आगे नत-मस्तक होंगे अपनी सेवा देने को। हम जगमगाती आत्माओं द्वारा उपयोग किया जाना वे अपना भाग्य समझेंगे। लेकिन इस लक्ष्य पर पहुंचने से पहले हमें उन पायदानों पर चलना होगा जिनपर हमें परमात्मा शिव चलाना चाहते हैं। परमात्मा शिव द्वारा बताये उन पायदानों पर चलना बहुत सहज है, सिर्फ अपने भीतर हमने जिस विकार, भ्रम और अज्ञान रूपी अंधकार को पनाह दे रखी है, उसे निकाल बाहर करना होगा। और यदि आप स्वयं में से कुछ निकालने की ज़हमत न करना चाहें तो कुछ स्वयं में जोड़ ही लें। स्वयं में उस ईश्वरीय ज्ञान को जोड़ लें जो आपकी आत्मा को रोशन कर देगा, जिससे आपको उन पायदानों पर चलना आसान हो जायेगा, स्वयं में उस स्वरूप को धारण कर लें जो परमात्मा शिव आपको बनाना चाहते हैं, जिस रूप में वो आपको देखते हैं, शायद इन सबको स्वयं में जोड़ लेने के बाद आपको स्वयं से कुछ निकालने की आवश्यकता ही न पड़े!

तो हे श्रेष्ठ आत्माओं! दीपावली में स्थूल दीये तो जलाओ, परन्तु पहले स्वयं को ऐसी जगमगाती ज्योत बना लो जो आपका जीवन रूपी जहान तो रोशन हो ही, साथ ही जो आपके सानिध्य में आये उसका जीवन भी रोशन हो जाये। यदि ऐसा हो गया तो निश्चित रूप से वो दिन दूर नहीं जब विशेष दीपावली के दिन दीप जलाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ेगी, बल्कि ये सारा संसार हर पल हम जागती ज्योत आत्माओं की रोशनी से ऐसा जगमगा रहा होगा कि ये दीये उस दिव्य प्रकाश के सामने स्वयं को तुच्छ अनुभव करेंगे। ये प्रकृति हमारे दिव्य प्रकाश से प्रकाशित होने को लालायित है, बस देर है तो हमें स्वयं को प्रकाशित करने की....

आगरा-शास्त्रीपुरम। सेवाकेन्द्र पर वृक्षारोपण के कार्यक्रम में वृक्षारोपण करते हुए चार्टर्ड एकाउण्टेंट शरद पालीवाल, डॉ. राजीव मोदी, ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. रामप्रकाश व अन्य।

जयपुर-अर्जुन नगर। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर आयोजित चैतन्य झाँकी के उद्घाटन अवसर पर समूह चित्र में पार्षद बाबूलाल दतोनिया, बी.जे.पी. वार्ड अध्यक्ष राजकुलदीप जी, डॉ. खुराना, ब्र.कु. गोमती, ब्र.कु. भावना व अन्य।

हरदोई-पिहानी चुंगी। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी पर लगाई गई झाँकी में बालकृष्ण को भोग खिलाते हुए उपजिलाधिकारी पी.पी. तिवारी। साथ हैं ब्र.कु. मालती, ब्र.कु. कल्पना व ब्र.कु. लवली।

रतिया-हरियाणा। विधायक रविन्दर सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. स्वामीनाथन। साथ हैं ब्र.कु. मदन व ब्र.कु. डॉ. सीमा।

मण्डी गोविंद गढ़-पंजाब। एस.एस.पी. जीतेन्द्र सिंह खैहरा को राखी बांधते हुए ब्र.कु. साक्षी। साथ हैं ब्र.कु. कविता।

किशनगंज-बिहार। नगरपालिका अध्यक्ष आर्ची देवी को राखी बांधते हुए ब्र.कु.सुमन।

शांतिवन-आबू रोड। उत्तराखण्ड के पूर्व कैबिनेट मिनिस्टर डॉ. मोहन सिंह रावत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. भूपाल,शांतिवन प्रबंधक। साथ हैं ब्र.कु. मेहरचंद, ब्र.कु. दीपक व ब्र.कु. नारायण।

बुटवल-नेपाल। 'आध्यात्मिक स्नेह मिलन' के पश्चात् समूह चित्र में बोलबम धाम,शैनामैना के प्रमुख आचार्य गुरु किशोर गौतम, ब्र.कु. कमला, ब्र.कु. नारायण तथा अन्य राजनीतिज्ञ, समाजसेवी एवं ब्र.कु. भाई।

कथा सरिता

व्यर्थ है अभिमान

एक घर के मुखिया को यह अभिमान हो गया कि उसके बिना उसके परिवार का काम नहीं चल सकता। उसकी छोटी सी दुकान थी। उससे जो आय होती थी, उसी से उसके परिवार का गुज़ारा चलता था।
चूंकि कमाने वाला वह अकेला ही था इसलिए उसे लगता था कि उसके बगैर कुछ नहीं हो सकता। वह लोगों के सामने डींग हांका करता था।
एक दिन वह एक संत के सत्संग में पहुंचा। संत कह रहे थे, ``दुनिया में किसी के बिना किसी का काम नहीं रुकता। यह अभिमान व्यर्थ है कि मेरे बिना परिवार या समाज ठहर जाएगा। सभी को अपने भाग्य के अनुसार ही प्राप्त होता है।''
सत्संग समाप्त होने के बाद मुखिया ने संत से कहा, ``मैं दिन भर कमाकर जो पैसे लाता हूँ उसी से मेरे घर का खर्च चलता है। मेरे बिना तो मेरे परिवार के लोग भूखे मर जाएंगे।''
संत बोले, ``यह तुम्हारा भ्रम है। हर कोई अपने भाग्य का खाता है।''
इस पर मुखिया ने कहा, ``आप इसे प्रमाणित करके दिखाइए।''
संत ने कहा, ``ठीक है। तुम बिना किसी को बताए घर से एक महीने के लिए गायब हो जाओ।''
उसने ऐसा ही किया। संत ने यह बात फैला दी कि उसे बाघ ने अपना भोजन बना लिया है। मुखिया के परिवार वाले कई दिनों तक शोक संतप्त रहे।
गांव वाले आखिरकार उनकी मदद के लिए सामने आए। एक सेठ ने उसके बड़े लड़के को अपने यहां नौकरी दे दी। गांव वालों ने मिलकर लड़की की शादी कर दी। एक व्यक्ति छोटे बेटे की पढ़ाई का खर्च देने को तैयार हो गया।
एक महीने बाद मुखिया छिपता-छिपाता रात के वक्त अपने घर आया। घर वालों ने भूत समझ कर दरवाज़ा नहीं खोला।
जब वह बहुत गिड़गिड़ाया और उसने सारी बातें बताईं तो उसकी पत्नी ने दरवाज़े के भीतर से ही उत्तर दिया, `हमें तुम्हारी ज़रूरत नहीं है। अब हम पहले से ज़्यादा सुखी हैं।'
उस व्यक्ति का सारा अभिमान चूर-चूर हो गया। संसार किसी के लिए भी नहीं रुकता!!
यहां सभी के बिना काम चल सकता है। संसार सदा से चला आ रहा है और चलता रहेगा। जगत को चलाने की हाम भरने वाले बड़े-बड़े सम्राट मिट्टी हो गए, जगत उनके बिना भी चला है। इसलिए अपने बल का, अपने धन का, अपने कार्यों का, अपने ज्ञान का गर्व व्यर्थ है।

ऐसा भी प्रेम

एक फकीर बहुत दिनों तक बादशाह के साथ रहा। बादशाह का बहुत प्रेम उस फकीर पर हो गया। प्रेम भी इतना कि बादशाह रात को भी उसे अपने कमरे में सुलाता। कोई भी काम होता, दोनों साथ-साथ ही करते।
एक दिन दोनों शिकार खेलने गए और रास्ता भटक गए। भूखे-प्यासे एक पेड़ के नीचे पहुंचे। पेड़ पर एक ही फल लगा था। बादशाह ने घोड़े पर चढ़कर फल को अपने हाथ से तोड़ा।
बादशाह ने फल के छः टुकड़े किए और अपनी आदत के मुताबिक पहला टुकड़ा फकीर को दिया। फकीर ने टुकड़ा खाया और बोला, `बहुत स्वादिष्ट, ऐसा फल कभी नहीं खाया। एक टुकड़ा और दे दें।'
दूसरा टुकड़ा भी फकीर को मिल गया। फकीर ने एक टुकड़ा और बादशाह से मांग लिया। इसी तरह फकीर ने पाँच टुकड़े मांग कर खा लिए। जब फकीर ने आखिरी टुकड़ा मांगा, तो बादशाह ने कहा, `यह सीमा से बाहर है। आखिर मैं भी तो भूखा हूँ। मेरा तुम पर प्रेम है, पर तुम मुझसे प्रेम नहीं करते।' और सम्राट ने फल का टुकड़ा मुंह में रख लिया। मुंह में रखते ही राजा ने उसे थूक दिया, क्योंकि वह कड़वा था।
राजा बोला, `तुम पागल हो नहीं, इतना कड़वा फल कैसे खा गए?'
उस फकीर का उत्तर था, `जिन हाथों से बहुत मीठे फल खाने को मिले, एक कड़वे फल की शिकायत कैसे करूँ?' सब टुकड़े इसलिए लेता गया ताकि आपको पता न चले।
दोस्तों जहां मित्रता हो वहां संदेह न हो।

सज़ा किसको मिले?

एक राजा ब्राह्मणों को लंगर में भोजन करा रहा था। तब पंक्ति में अंत में बैठे एक ब्राह्मण को भोजन परोसते समय एक चील अपने पंजे में एक मुर्दा साँप लेकर राजा के ऊपर से गुज़री। और उस मुर्दा साँप के मुख से कुछ बूंदें ज़हर की खाने में गिर गईं। फलस्वरूप वह ब्राह्मण ज़हरीला खाना खाते ही मर गया।
अब जब राजा को सच का पता चला तो ब्रह्म हत्या होने से उसे बहुत दुःख हुआ। मित्रों ऐसे में अब ऊपर बैठे यमराज के लिए भी यह फैसला लेना मुश्किल हो गया कि इस पाप-कर्म का फल किसके खाते में जायेगा...?
राजा...जिसको पता ही नहीं था कि खाना ज़हरीला हो गया है...या...वह चील...जो ज़हरीला साँप लिए राजा के ऊपर से गुज़री...या...वह मुर्दा साँप... जो पहले से मर चुका था...
दोस्तों बहुत दिनों तक यह मामला यमराज की फाईल में अटका रहा। फिर कुछ समय बाद कुछ ब्राह्मण राजा से मिलने उस राज्य में आए, और उन्होंने किसी महिला से महल का रास्ता पूछा... तो उस महिला ने महल का रास्ता तो बता दिया, पर रास्ता बताने के साथ-साथ ब्राह्मणों से ये भी कह दिया कि देखो भाई... `ज़रा ध्यान रखना, वह राजा आप जैसे ब्राह्मणों को खाने में ज़हर देकर मार देता है।'
बस मित्रों जैसे ही उस महिला ने शब्द कहे, उसी समय यमराज ने फैसला ले लिया कि उस ब्राह्मण की मृत्यु के पाप का फल इस महिला के खाते में जाएगा और इसे उस पाप का फल भुगतना होगा।
यमराज के दूतों ने पूछा....प्रभु ऐसा क्यों? जबकि उस ब्राह्मण की हत्या में उस महिला की कोई भूमिका ही नहीं थी। तब यमराज ने कहा कि...भाई देखो, जब कोई व्यक्ति पाप करता है तब उसे आनंद मिलता है।
पर उस ब्राह्मण की हत्या से न तो राजा को आनंद मिला न मरे साँप को आनंद मिला और न ही उस चील को आनंद मिला... पर उस पाप-कर्म की घटना की बुराई करने के भाव से बखान कर उस महिला को ज़रूर आनंद मिला!
इसलिए राजा के उस अनजान पाप-कर्म का फल अब इस महिला के खाते में जायेगा।
बस मित्रों इसी घटना के तहत आज तक जब भी कोई व्यक्ति किसी दूसरे के पाप-कर्म का बखान बुरे भाव से करता है तब उस व्यक्ति के पापों का हिस्सा उस बुराई करने वाले के खाते में भी डाल दिया जाता है।
दोस्तों, अक्सर हम जीवन में सोचते हैं कि जीवन में ऐसा कोई पाप नहीं किया फिर भी जीवन में इतना कष्ट क्यों आया?
दोस्तों, ये कष्ट और कहीं ने नहीं बल्कि लोगों की बुराई करने के कारण उनके पाप-कर्मों से आया होता है जिनको यमराज बुराई करते ही हमारे खाते में ट्रांसफर कर देते हैं।
इसलिए दोस्तों, आज से ही संकल्प कर लो कि किसी के भी पाप-कर्मों का बखान बुरे भाव ने नहीं करना, यानी किसी की भी बुराई नहीं करना।

बिलाड़ा-राज.। अर्जुन लाल गर्ग साहब,विधि व न्याय मंत्री को राखी बांधते हुए ब्र.कु. आरती। साथ हैं ब्र.कु. लता।

फाज़िलका-पंजाब। मालेरकोटला की रानी मनवेर अलनिशा बेगम को परमात्म परिचय देने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. प्रिया, ब्र.कु. शालिनी, फॉरेस्ट ऑफिसर सुभाष व सुमित्रा बहन।

शिकोहाबाद-अवगढ़। एडिशनल जज उमाशंकर शर्मा को राखी बांधते हुए ब्र.कु. पूनम। साथ हैं ब्र.कु. दीप्ति।

आगरा-शास्त्रीनगर। 'किसान सशक्तिकरण रैली के सेवाकेन्द्र पहुंचने पर रैली का निर्देशन व शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. मधु, ब्र.कु. सरिता व ब्र.कु. शालू।

बहादुरगढ़-हरियाणा। एच.एस. गैस प्लांट में 'रोड सेफ्टी' विषय पर आयोजित वर्कशॉप में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अमृता। साथ हैं ब्र.कु. दीपा।

दिल्ली-पीतमपुरा। बैंक ऑफ बड़ौदा के मैनेजर शंकर महतो को राखी बांधने के पश्चात् समूह चित्र में ब्र.कु. कनिका, ब्र.कु. सुनीता व अन्य।

तम से पुरुषोत्तम तक की यात्रा

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

जब किसी भी धर्म से हमारी आस्था जुड़ती है और उसमें यदि कोई धर्म के प्रति कुछ भी कहे तो हम तुरंत आहत होते हैं, और असुरक्षा के डर से आक्रान्त रूप लेकर विरोध जताते हैं। धर्म के साथ न्याय क्या यही है? यह तो सबसे बड़ी अज्ञानता होगी, क्योंकि कोई भी धर्म हमें मानवता के साथ व मानवीय मूल्यों के साथ जीना सिखाता है, विरोध या आक्रोश जताना नहीं सिखाता। इसलिए धर्म को सही अर्थों में किसी ने समझा ही नहीं।

धर्म को यदि हम शास्त्रगत लें तो वह यह है कि आप, परिवार, समाज तथा स्वयं के साथ कितनी मर्यादा व धारणा से चलते हैं। जैसे, पिता-धर्म, पुत्र-धर्म, पत्नी-धर्म, स्वयं के साथ शारीरिक धर्म आदि आदि। यह धर्म की निचले पायदान से शुरुआत है। इसकी गहराई आज नहीं है, इसी को मनुष्य का सबसे गहरा तम कह सकते हैं। अज्ञान-अंधकार से निकलना ही धर्म की पराकाष्ठा हो सकती है।

किसी को समझना हमें मुश्किल क्यों लगता है? शायद हम उतनी ऊँचाई पर अभी नहीं हैं कि पहचान सकें या फिर ये हो सकता है कि व्यक्ति विशेष ही इतना श्रेष्ठ व महान हो कि उसकी पराकाष्ठा को छू पाना हमारे वश में ना हो। होने को तो कुछ भी हो सकता है। प्रश्न यह खड़ा होता है कि मनुष्य की मूल-प्रवृत्ति संग्रह की है और वो संग्रह की जिजीविषा को शान्त करने के चक्र में वस्तु बनकर ही रह गया है। वह कुछ समझ नहीं पा रहा है कि वो किस तमस में फंसा है। उसे लगता है कि उसकी ज़िन्दगी उजाले में है, परंतु यह भ्रम ही उसकी मूल प्रवृत्ति से उसे भटका रहा है।

धर्म से ऊपर अध्यात्म है। अध्यात्म केवल समझ पर ही पूर्णतया आधारित है। जितना-जितना समझ का प्रकाश हमारा बढ़ता है, उतना हमारे अंदर का तम या अंधकार या अज्ञानता नष्ट होती जाती है। सभी व्यक्ति आध्यात्मिक ही हैं, लेकिन अपने वजूद को धर्म या शारीरिक धर्म में ढूंढ़ रहे हैं। आज धर्म का विकृत रूप सबके सामने तेज़ी से आ रहा है। सभी लड़ रहे हैं किसके लिए? पता नहीं। जमा कर रहे हैं किसके लिए? पता नहीं। पूछो तो कहते हैं, यही तो हमारा धर्म है। अरे, धर्म को मानने वालों! तुम इस बात को क्यों नहीं समझते कि धर्म हमारी जीवन पद्धति है, एक संस्था है, एक मर्यादा है जिसमें रहकर ही हमें जीवन जीना पड़ता है, लेकिन हमने तो सारी मर्यादाएं ही तोड़ दी हैं। आज मनुष्य पूर्णतया मूल्यों से गिरा हुआ है, अर्थात् उसकी वैसे भी कोई कीमत नहीं रही, तभी तो अपने अस्तित्व को जुए व गैर-कानूनी कामों में लिप्त कर बैठा है।

आने वाली दिवाली में फिर से वही अपना देवाला निकालने की दौड़ में वह अवश्य शामिल होगा!

दीपावली दीपों का त्योहार है। हर साल ऐसे ही दीपक जगते हैं, ऐसे ही बुझते हैं। आप वैसे भी देखें की जब भी कोई दीपक बुझा हुआ हो, तो लोग दीपक की बनावट देखते व कहते हैं कि कितना सुंदर दीपक बना हुआ है, उसकी डिज़ाइन आदि की तारीफ करते हैं। लेकिन दीपक की लौ यदि जल रही हो तो उस समय किसी का ध्यान मिट्टी की बनावट पर नहीं जाता है। ठीक उसी प्रकार यदि हम अपने अंदर के तम या अंधकार या अज्ञानता या नासमझी को मिटा दें, तो हमें लोग अपने शरीर के धर्म से नहीं, हमारे आत्मिक धर्म के साथ जोड़कर देखने लग जाएंगे। धर्म शरीर से निकल आत्मिक होगा। उस सुंदर रचना को सभी अभी भी नमन करते हैं। सब सभी के होंगे और दुनिया पुरुषोत्तम होगी। तो निकालें तम को और बन जाएं पुरुषोत्तम।

7 कदम राजयोग की ओर...

मन की बातें

-ब्र.कु. सूर्य

प्रश्न: मेरा नाम बलवंत है, आजकल कुंडलिनी जागरण करने के लिए बहुत सारे महात्मा और आचार्य कार्यक्रम करते रहते हैं। मैंने अभी अभी राजयोग सीखा है। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या राजयोग से भी कुंडलिनी जागरण हो सकता है? क्या हमें इसपर ध्यान देना चाहिए? या हमारा लक्ष्य कुछ और होना चाहिए?

उत्तर: कुंडलिनी शक्ति मुलाधार चक्र के साढ़े तीन चक्र में स्थित रहती है, ऐसी मान्यता है कि यदि ये जागृत होकर ऊपर की ओर चलने लगे तो ये सभी चक्रों का भेदन करते हुए ब्रह्म रन्ध्र में पहुंच जाती है और मनुष्य को कई सुंदर आध्यात्मिक अनुभव होने लगते हैं, उनकी एकाग्रता बढ़ जाती है। चेहरे पर तेज बढ़ जाता है और मनिच्छित फल उन्हें प्राप्त होने लगता है। इसीलिए लोग कुंडलिनी जागरण के लिए अनेक साधनाएं करते आये हैं।

राजयोग के द्वारा कुंडलिनी शक्ति स्वतः ही जागृत हो जाती है। यद्यपि राजयोग में इसका वर्णन एवं चर्चा बिल्कुल नहीं है, क्योंकि परमात्मा ने जो राजयोग सिखाया है वो परमात्मा और आत्मा का मिलन है। राजयोग से तो आत्मा ही जागृत हो जाती है इसलिए सबकुछ जागृत हो जाता है। जीवन सुख-शांतिमय हो जाता है। बुद्धि पवित्र और दिव्य होने लगती है। चेहरे पर तेज आ जाता है। साथ ही साथ जीवन सफलता और समृद्धि से भरपूर होने लगता है।

वास्तव में इसको अपना लक्ष्य बनाने की कोई आवश्यकता नहीं है। हमारा तो लक्ष्य है आत्मा को सम्पूर्ण पावन बनाना। अपनी मूल सम्पूर्ण स्थिति को प्राप्त करना तथा स्वयं को कर्मातीत स्थिति तक ले चलना। यही अध्यात्म के सर्वोच्च लक्ष्य हैं बाकी सभी बातें इनमें समाई हुई हैं।

प्रश्न: मेरा नाम चंद्राणी है, मैं आपसे अपनी समस्या का समाधान चाहती हूँ, मुझे खुशी नहीं रहती, मैं सदा चिंतित सी रहती हूँ, स्वयं को कमज़ोर और हीन भावना से ग्रस्त अनुभव करती हूँ, मैं इस कमज़ोर मानसिक स्थिति से बाहर आना चाहती हूँ, मैं भी दूसरों की तरह हस-बहल कर जीवन जीना चाहती हूँ, कृपया मार्गदर्शन करें।

उत्तर: खुशी तो मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा खज़ाना है, परंतु आज बुद्धिमान मनुष्य खुशी को खोता जा रहा है। पशु-पक्षी, जीव-जन्तु सभी निश्चिंत हैं परंतु मनुष्य ही सदा चिंतित प्रतीत होता है। आपने सुंदर लक्ष्य बनाया है नेगेटिविटी से बाहर निकलने का, और ईश्वरीय ज्ञान में वो शक्ति है जो हमें खुशी प्रदान करती है और निश्चिंत जीवन जीना सिखाती है।

आप दस बारह स्वमान की सुंदर-सुंदर बातें नोट करें। उनके बार-बार अभ्यास करने से आपके विचार महान होने लगेंगे और आप हीन भावना से मुक्त हो जायेंगी। प्रतिदिन सेवाकेन्द्र पर जाकर ईश्वरीय महावाक्य सुनें...जब आप सुनेंगे कि भगवान कह रहे हैं कि तुम बहुत महान हो, तुम पदमापदम भाग्यशाली हो, तुम तो मेरे नयनों के नूर हो, तो आपके अंदर जागृति आने लगेगी, आपकी ये हीन भावनायें ही आपकी खुशी छीन रही हैं, आप अपनी खुशी के लिए दूसरों की तरफ कदापि ना देखें। याद रखें खुशी हमारे अंदर ही रहती है, हम उसे जगने नहीं देते। प्रतिदिन सवेरे उठकर आप परमात्मा से मीठी मीठी बातें किया करें, उसका शुक्रिया अदा करें और एक घंटा रोज़ योगाभ्यास करें। इससे आपकी बुद्धि में लगी हुई गांठें खुल जाएंगी और आप खुशियों भरा जीवन जी सकेंगे।

ईश्वरीय चिंतन से चिंताएं समाप्त हो जाती हैं, `मैं' और `मेरा' मनुष्य को चिंताओं के गर्क में ले जाते हैं। और सबकुछ `तेरा' अर्थात समर्पण भाव और यह स्मृति कि भगवान स्वयं भी मुझे साथ दे रहे हैं आपको निश्चिंत जीवन प्रदान करेगी। इनका रोज़ अभ्यास करें। छः मास तक आपको ये सब अभ्यास अवश्य करने हैं। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप स्वयं खुशियों से तो भर ही जाएंगी साथ ही आप सबको खुशी बांटने वाली भी बन जाएंगी।

प्रश्न: मेरे बड़े बेटे की शादी को 4 साल हो गये हैं, कुछ आपसी अनबन के कारण अब दोनों अलग-अलग रह रहे हैं। कोर्ट में तलाक का केस भी चल रहा है। लेकिन अब बहू और उसके परिवार वाले केस वापस लेकर साथ रहना चाहते हैं। लेकिन मेरा बेटा इसे स्वीकार नहीं कर रहा है, इससे घर की स्थिति बहुत अशांत बनी रहती है, क्या करें?

उत्तर: कलियुग के इस भयावह काल में भारत में भी तलाक के केसेज़ बढ़ते जा रहे हैं। यद्यपि इसके लिए मनुष्य के पूर्व जन्म के कर्म भी ज़िम्मेवार हैं, परंतु मनुष्य के स्वभाव, संस्कार, उसका क्रोध, अभिमान और गलत व्यवहार भी इस स्थिति को पैदा करते हैं। आज मनुष्यों में स्वार्थ, लोभ, कामनाएं बहुत बढ़ गई हैं। मनुष्य यदि अपने जीवन के महत्व को समझ ले और जीवन की यात्रा में एक दूसरे के सच्चे मित्र बन जायें, एक दूसरे की भावना को सम्मान दें तो ये समस्या काफी हद तक कम हो सकती है। दहेज पर झगड़ा रखने वालों को ये याद रखना चाहिए कि धन-संपदा से भी अधिक मूल्यवान है एक चरित्रवान मनुष्य। चरित्र ही सबसे बड़ी दौलत है।

जिनके पास तलाक संबंधी ऐसे कोर्ट केस चल रहे हैं, उन्हें बातचीत कर इसके समाधान तक पहुंचने की कोशिश तो ज़रूर करनी चाहिए पर इसके साथ साथ 21 दिन की एक विघ्न-विनाशक योग भट्ठी भी अवश्य कर लेनी चाहिए। इसको इस विधि से करें– योग से पहले तीन स्वमान पाँच-पाँच बार याद करेंगे... मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, विघ्नविनाशक हूँ और सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। यदि आप बहुत एकाग्रचित होकर ये अभ्यास करेंगे तो 21 दिन के बाद आपको बहुत सुंदर परिणाम प्राप्त होंगे।

पिछले दिनों ही दिल्ली के एक अति विशिष्ट व्यक्ति ने अपना अनुभव सुनाया कि उनका पिछले 37 वर्ष से कोर्ट में केस चल रहा था और उन्होंने 21 दिन ऐसी ही योग भट्ठी की और 25वें दिन ही फैसला उनके अनुकूल हो गया । योग में अनंत शक्ति है, ये हमारा कल्याण करती है, आप भी योग का ऐसा सुंदर अभ्यास करेंगे तो आपका भी कल्याण होगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

Peace of Mind
For Cable & DTH
+91 8104777111
TATA Sky 192 airtel digital TV 686 videocon d2h 497 RELIANCE Digital TV 171
"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83*E

सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरुषार्थ

स्वमान - मैं सहनशील आत्मा हूँ।

शिवभगवानुवाच – ``तुम एक बार सहन करोगे तो बाबा सौ बार दुआएं और वरदान देंगे। जो सहन करेंगे वही शहंशाह बनेंगे।''

योगाभ्यास – अनुभव करें कि बापदादा अपनी सम्पूर्ण किरणों सहित मेरे ऊपर छत्रछाया के रूप में विराजमान हैं... मुझे दिलासा दे रहे हैं... मेरे आने वाले स्वर्णिम कल की झलक दिखा रहे हैं... बापदादा मुझे शक्ति दे रहे हैं निर्विघ्न रहने व अपने सेवा स्थल को निर्विघ्न बनाने की...।

धारणा – सहनशीलता को बढ़ाने के लिए याद रखें कि सहन करने की आज्ञा स्वयं भगवान ने दी है। सहन करना मरना नहीं है, लेकिन उड़ना है। जिनके पास सहनशक्ति है उनके पास सभी शक्तियां स्वतः आ जाती हैं। आपका झुकना, झुकना नहीं है, लेकिन सदाकाल के लिए सामने वाली आत्मा को झुकाना है। आप जिनका सहन करेंगे वे आपके राज्य में आयेंगे अर्थात् भविष्य में आपके अधीन रहकर आपकी सेवा करेंगे। सदा अपने श्रेष्ठ स्वमान की सीट पर रहें। हमारी प्रालब्ध के सम्मुख सहन करने वाली बातें तो बहुत छोटी हैं। प्राप्तियों को सम्मुख रखेंगे तो सहन करना सहज हो जायेगा।

तीव्र पुरुषार्थियों के प्रति – पत्थर को लगातार हथौड़े से चोट कर-करके ही सुंदर मूर्ति के रूप में परिणित किया जाता है। लगातार चोटें सहन करके ही पत्थर पूज्य देवी या देवता का स्वरूप ग्रहण करता है। जो पत्थर सहन नहीं कर पाते वे साइड में हटा दिए जाते हैं। वे उच्च स्थान पर स्थापित नहीं हो पाते। तो आइये हम भी इनसे प्रेरणा लेकर सहनशीलता के अवतार बन जायें... संसार हमसे सहनशीलता का पाठ सीखे ऐसा आचरण करके दिखाएं... भगवान के लिए और विश्व को स्वर्ग बनाने के लिए हमारा सहन करना कोई बड़ी बात नहीं...।

स्वमान - मैं पूज्य आत्मा हूँ।

शिवभगवानुवाच – ``विश्व की आत्माएं बिल्कुल शक्तिहीन, दुःखी, अशांत चिल्ला रही हैं। बाप के आगे, आप पूज्य आत्माओं के आगे पुकार रही हैं - कुछ घड़ियों के लिए भी सुख दे दो, शांति दे दो, खुशी दे दो, हिम्मत दे दो। क्या उन पर आप पूज्य आत्माओं को रहम नहीं आता?''

योगाभ्यास – बापदादा के साथ विश्व के ग्लोब पर बैठकर सर्व आत्माओं को सुख, शांति, शक्ति व खुशी की सकाश दें... दिन में दस बार परमधाम की गहन शांति का अनुभव... मुक्ति-जीवनमुक्ति का अनुभव करें... ताकि सम्पर्क में आने वालों को भी वह अनुभव हो सके।

प्रैक्टिकल धारणा – बेहद की वैराग्य-वृत्ति। जब बिल्कुल बेहद के वैरागी बन जायेंगे, वृत्ति में भी वैरागी, दृष्टि में भी बेहद के वैरागी, सम्बन्ध-सम्पर्क में, सेवा में, सबमें बेहद के वैरागी, तभी मुक्तिधाम का दरवाज़ा खुलेगा।

मनन-चिन्तन – बेहद के वैराग्य का अर्थ क्या है? ज्ञान के किन महावाक्यों को सदैव सम्मुख रखें जिससे बेहद का वैराग्य इमर्ज रहे? बेहद के वैरागी के लक्षण क्या होंगे?

तीव्र पुरुषार्थियों प्रति – बेहद का वैराग्य ही तीव्र पुरुषार्थ की दिशा में पहला कदम है। त्याग व तपस्यामय जीवन के लिए यह सर्वोत्तम धारणा है। हमें यह पता है कि अब सम्पूर्ण परिवर्तन का समय आ गया है... परिवर्तन कभी भी अवश्यम्भावी है। अचानक और एवररेडी, यह दो शब्द सदैव याद रखें तो बेहद के वैराग्य का दीपक सदा जागृत रह सकेगा।

मंगोलिया। 21 सितम्बर अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस पर बुद्धिस्ट मोनास्ट्री में आयोजित कार्यक्रम में शरीक हुए यूनाइटेड नेशन्स के प्रतिनिधि,मंगोलिया,बीते ट्रैंकमैन, मेयर ऑफ यू.बी. जी.मुनबयार,हेड ऑफ द सिविल सर्विसेज़ काउंसिल ऑफ मंगोलिया, एस. सेडेन्डम्बा व ब्र.कु. बहन।

जयपुर-सोडाला। सांगानेर पंचायत समिति प्रधान कैलाश कुमावत को राखी बांधते हुए ब्र.कु. स्नेह।

फर्रुखाबाद-वीवीगंज(उ.प्र.)। रक्षाबंधन के कार्यक्रम में जिलाधिकारी सत्येन्द्र सिंह को राखी बांधते हुए ब्र.कु. मंजु। साथ हैं जिला मुख्य विकास अधिकारी एस.एम. शुक्ला।

हरदुआगंज-उ.प्र.। थानाध्यक्ष एस.के. यादव को राखी बांधते हुए ब्र.कु. कमलेश। साथ हैं ब्र.कु. हेमा।

शामली। पत्रकारों के स्नेह मिलन में सभी को राखी बांधने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. राज, ब्र.कु. सुरभि तथा पत्रकारगण।

दिल्ली-समयपुर। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी के शुभ अवसर पर बादली विधान सभा के विधायक अजेश यादव को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु. कुसुम। साथ हैं ब्र.कु. रजनी।

भीलवाड़ा। विजय सिंह पथिक नगर स्थित नवनिर्मित सेवाकेन्द्र के परिसर में वृक्षारोपण करते हुए पर्यावरण संवर्धन संस्थान के अध्यक्ष गोविंद सोडानी। साथ हैं ब्र.कु. इन्द्रा, ब्र.कु. तारा व अन्य भाई बहन।

भीनमाल-राज.। सेवाकेन्द्र एवं ग्लोबल नेत्र संस्थान के संयुक्त तत्वाधान में 'निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर' का उद्घाटन करते हुए पंचायत समिति के प्रधान धुखाराम पुरोहित, उपखण्ड अधिकारी चूनाराम विश्नोई, ब्र.कु. गीता, डॉ. जल्पा, डॉ. अभिमन्यु व अन्य।

जैतारण-राज.। सेंट्रल जेल में कैदी भाइयों को कार्यक्रम के पश्चात् प्रतिज्ञा कराते हुए ब्र.कु. छाया, ब्र.कु. निर्मला व जेलर साहब।

आज के परिप्रेक्ष्य में... - पेज 1 का शेष

रासायनिक खेती एवं जैविक खेती की तुलना में अधिक लाभदायक सिद्ध हो चुकी है, साथ ही पौष्टिकता भी प्रमाणित हो चुकी है।

कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. अमर सिंह ने किसानों को सरकार द्वारा उपलब्ध विभिन्न सुविधाओं से अवगत कराया तथा केन्द्र द्वारा खेती में किए गए वैज्ञानिक प्रयोगों के बारे में प्रकाश डाला।

कुम्हेर के कृषि विश्वविद्यालय की प्रो. डॉ. कुसुम कोठारी ने कृषि एवं ग्राम विकास हेतु महिलाओं की भूमिका को रेखांकित किया।

राष्ट्रीय कृषि एवं ग्राम विकास बैंक(नाबार्ड) के संभागीय प्रभारी अभय कुमार ने कहा कि आत्मा द्वारा किये गये सत्य कार्य हमेशा सफल होते हैं। नाबार्ड किसान एवं खेती की समस्याओं के निवारण में महती भूमिका अदा कर रहा है।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में बोलते हुए अतिरिक्त जिला कलेक्टर ओ.पी. जैन ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा आध्यात्मिकता के साथ मनुष्य जीवन के अनेक क्षेत्रों में भी किए जा रहे प्रभावशाली कार्यों की सराहना की।

महापौर शिवसिंह भौंट ने इस अभियान द्वारा जिले भर में खेती एवं ग्राम विकास के क्षेत्र में की गई सेवाओं की सराहना की और शुभ कामनाएं व्यक्त की।

ब्र.कु. सीताराम मीणा,आई.ए.एस.पीठासीन न्यायाधीश,सब न्यायालय ने सभी का स्वागत करते हुए वर्तमान विश्व की विभिन्न समस्याओं के निदान में तथा नारी जागृति की दिशा में इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय के महत्व को रेखांकित किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ ब्र.कु. पूनम द्वारा प्रस्तुत गीत `प्रभु प्यार का एक तराना' तथा सभी अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। सभा में उपस्थित सभी अतिथियों एवं किसानों को साहित्य सौगात एवं प्रसाद भेंट किया गया।

फरीदाबाद में बाबा अमरनाथ के दर्शन से जनता अभिभूत

मूविंग मॉडल्स ने किया मंत्रमुग्ध

फरीदाबाद। ब्रह्माकुमारीज़ के फरीदाबाद सेवाकेन्द्र द्वारा बाबा अमरनाथ आध्यात्मिक मेला का आयोजन दशहरा ग्राउंड में किया गया। इस आध्यात्मिक मेले में न केवल अमरनाथ दर्शन ही हुए बल्कि आकर्षक और मनमोहक अलग-अलग प्रकार के ज्ञानवर्धक एवं महत्वपूर्ण स्टॉल्स भी लगाए गए। सतयुग की झाँकियों को मूविंग मॉडल्स के रूप में दर्शाया गया। झाँकियों के माध्यम से आनेवाली स्वर्णिम दुनिया की झलकियां दिखाई गई, जिसने लोगों को खूब आकर्षित किया। सर्व आत्माओं का पिता निराकार परमपिता परमात्मा शिव की झाँकी में दिखाया गया है कि ईश्वर का निराकार, ज्योतिर्बिन्दु प्रकाश स्वरूप ही ऐसा है जो सभी धर्मों में किसी न किसी रूप में माना गया है।

बाबा अमरनाथ आध्यात्मिक मेले का उद्घाटन करते हुए राज्यमंत्री गुज्जर, विपुल गोयल, एच.के.बत्रा, ब्र.कु.शुक्ला, ब्र.कु.अनुसुइया, ब्र.कु.उषा व अन्य। अमरनाथ मेले का विहंगम दृश्य।

'आज का मानव अनेक बंधन में' विषयक झाँकी में दिखाया गया कि आज का मानव किस प्रकार अनेक बंधन जैसे संबंधों का बंधन, कामकाज का बंधन, सरकार का बंधन, व्यसनों का बंधन आदि की वजह से तनाव का अनुभव करता है और दु:खी रहता है। **राजयोग की झाँकी** में दिखाया गया है कि कैसे राजयोग आत्मा को विभिन्न प्रकार के बंधनों से छुड़ाता है, हमारी कर्मेन्द्रियां वश में हो जाती हैं और शरीर में फैली नकारात्मक ऊर्जा खत्म होने लगती है। **व्यसनमुक्ति महायज्ञ की झाँकी** में दिखाया गया कि आज मानव विभिन्न प्रकार के व्यसनों से ग्रसित है। वह व्यसनों को अपने तनाव को कम करने का ज़रिया मानता है जो कि बिल्कुल गलत सोच है। इसी प्रकार की अन्य आध्यात्मिक एवं शिक्षाप्रद आकर्षक झाँकियों के माध्यम से जनमानस को संदेश देने का प्रयास किया गया।

अमरनाथ मेला के उद्घाटन अवसर पर अतिथि के रूप में केन्द्रीय राज्यमंत्री कृष्ण पाल गुज्जर, विधायक विपुल गोयल एवं चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज़ के चेयरमैन एच.के. बत्रा मौजूद थे। कार्यक्रम की शुरुआत शिव की वंदना से की गई व इसके पश्चात् दीप प्रज्वलन द्वारा मेले का शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर ओ.आर.सी. की डायरेक्टर ब्र.कु. शुक्ला, फरीदाबाद एन.आई.टी. की सेवाकेन्द्र प्रभारी ब्र.कु. उषा, ब्र.कु. अनुसुइया अन्य ब्र.कु. भाई बहनें मौ-जूद रहे।

बर्फानी बाबा देखने उमड़ा जनसैलाब

मेले में आकर्षण का केन्द्र अमरनाथ की गुफा 35 फुट ऊँची पहाड़ी पर बनाई गई थी जिसमें बर्फ का शिवलिंग बनाया गया। अमरनाथ की इस अद्भुत झाँकी का दर्शन लगभग 4.5 लाख श्रद्धालुओं ने किया।

मंगलमय जीवन हेतु जोड़ो आशीर्वादों का सेतु

ओ.आर.सी.-गुड़गांव। जब हमारे अंदर दृढ़ता एवं आध्यात्मिक ऊर्जा का संचार होता है तो संसार में कोई भी कार्य असंभव नहीं रह जाता। मैंने जीवन में अनेक प्रकार की शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थाएं देखी, लेकिन जैसा अनुभव इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय में हुआ वो अद्वितीय है। आज हम मंगल पर जीवन ढूंढ़ रहे हैं, लेकिन ज़रूरत है जीवन में मंगल की। जीवन में मंगल तभी हो सकता है जब हम बुजुर्गों का सम्मान करें। उक्त विचार किरण चोपड़ा,संस्थापक,वरिष्ठ नागरिक केसरी क्लब एवं निदेशिका पंजाब केसरी ने ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा `दुआओं का दरिया' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये।

उन्होंने कहा कि वर्तमान समय माँ-बाप और बच्चों के बीच अंतर को मिटाने के लिए सिर्फ समझदारी चाहिए। राजयोग के द्वारा ही उनकी सब समस्याओं का हल हो सकता है। ऐसे आध्यात्मिक एवं शक्तिशाली वातावरण में आये सभी बुजुर्गों ने बहुत ही खुशी, आनंद एवं प्रेम का अनुभव किया। उन्होंने कहा कि मैं चाहती हूँ कि केसरी क्लब द्वारा हर वर्ष वरिष्ठ नागरिकों का कार्यक्रम ओ.आर.सी में ही हो।

देवब्रथ दास,संयुक्त सचिव,नीति आयोग भारत सरकार ने अपने सम्बोधन में कहा कि मैं काफी समय से ब्रह्माकुमारीज़ से जुड़ा हुआ हूँ। राजयोग से मेरे जीवन में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया। जीवन में कोई भी अच्छा कार्य करने के लिए आयु की सीमा नहीं होती।

ब्र.कु.बृजमोहन,मुख्यसचिव, ब्रह्माकुमारीज़ ने कहा कि जिस घर में एक भी बुजुर्ग होता है, उस घर का बहुत सम्मान होता है, लेकिन आज हमारे मध्य इतने बुजुर्ग आये हैं, जिससे कि हम अपने को बहुत-बहुत सम्मानित महसूस कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि जीवन में दु:ख का असली कारण मोह है, मोह के कारण ही हम किसी न किसी समस्या में फँस जाते हैं। जीवन में कोई भी अच्छा कार्य करना हो तो उसे आज ही करें। चाहे हमारे पास कुछ भी नहीं है, लेकिन समय और श्वास तो है, जिनका हम सदुपयोग कर सकते हैं।

ब्र.कु. आशा,निदेशिका ओ.आर.सी. ने बताया कि बुजुर्ग नागरिक एक छायादार वृक्ष की तरह होते हैं, जो सदैव हमारे सुखमय जीवन के लिए आशीर्वाद और दुआएं देते रहते हैं। उन्होंने कहा कि मैं युवाओं से हमेशा कहती हूँ कि अपने बुजुर्गों के साथ अवश्य समय बितायें, क्योंकि उनके अनुभव से हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है।

डॉ. मोहित गुप्ता,हृदय रोग विशेषज्ञ ने सभी को बड़ी आयु में होने वाले शारीरिक परिवर्तनों और स्वास्थ्य की सही देखभाल के प्रति जागरुक किया। उन्होंने कहा कि हमें स्वस्थ रहने के लिए जिस प्रकार व्यायाम की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मन का व्यायाम भी ज़रूरी है। मन के व्यायाम के लिए हमें सदा सकारात्मक एवं सबके प्रति शुभ भावना व परमात्म स्नेही होना चाहिए।

डॉ.रूप सिंह,भिवाड़ी ने सभी को सदा खुश रहने के अनेक नुस्खे बताये। उन्होंने कहा कि खुशी के बराबर कोई खुराक नहीं है, खुश रहने वाला व्यक्ति ही समाज को कुछ दे सकता है। आज इंसान खुशी भौतिक चीज़ों में ढूंढ़ता है जबकि खुशी हमारे अंदर है।

कार्यक्रम के द्वारा अनेक बुजुर्ग नागरिकों ने अपनी कलाओं का भी मंचन किया। कार्यक्रम का संचालन ओ.आर.सी. की ब्र.कु. मधु ने किया। कार्यक्रम में लगभग 1500 वरिष्ठ नागरिकों ने भाग लिया।

'दुआओं का दरिया' कार्यक्रम में बुजुर्गों का हुआ अद्भुत सम्मान

- 1500 से भी अधिक बुजुर्ग नागरिकों ने लिया भाग।
- जीवन में मंगल तभी हो सकता है जब हम बुजुर्गों का सम्मान करें – किरण चोपड़ा
- जीवन में अच्छा कार्य करने के लिए उम्र की सीमा नहीं – देवब्रथ दास
- जिस घर में बुजुर्ग हैं, वो घर तो जैसे छायादार वृक्ष है संसार के लिए – ब्र.कु. आशा
- जीवन में कुछ भी अच्छा करना है तो अभी से करें – ब्र.कु. बृजमोहन

वरिष्ठ नागरिकों के लिए आयोजित `दुआओं का दरिया' विषयक कार्यक्रम के दौरान सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. बृजमोहन। साथ हैं देवब्रथ दास, किरण चोपड़ा व डॉ. मोहित गुप्ता। सभा में उपस्थित हैं शहर के वरिष्ठ नागरिक जन।

कार्यालय- ओम शान्ति मीडिया, संपादक- ब्र.कु.गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न.- 5, आबू रोड (राज.)- 307510. सदस्यता के लिए सम्पर्क- M - 9414006096, 9414182088,
Email- mediabkm@gmail.com, omshantimedia@bkivv.org, Website- www.omshantimedia.info
सदस्यता शुल्क: भारत - वार्षिक 190 रुपये, तीन वर्ष 570 रुपये, आजीवन 4500 रुपये । विदेश - 2500 रुपये (वार्षिक) कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शान्तिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।

RNI NO RAJHN/2000/721, POSTAL REGD. RJ/SIROHI/9623/15-17, Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment RJ/WR/WPP/003/2015-17, Posting on 12TH TO 14TH and 22ND TO 24TH each month, published on 15th Oct 2015
संपादक: ब्र.कु.गंगाधर, प्रकाशक: ब्र.कु.करुणा द्वारा ब्रह्माकुमारीज़ मीडिया प्रभाग (आर.ई.आर.एफ) के लिए प्रकाशित एवं डी.बी.प्रिंट सॉल्यूशन्स जयपुर से मुद्रित।